शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

हिन्दी विषय की उपचारात्मक(रिमीडियल) शिक्षण पर आधारित

शिक्षक संदर्शिका

कक्षा 6

सत्र 2023—2024

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षक–संदर्शिका (हिन्दी)

(उपचारात्मक शिक्षण हेतु)

कक्षा–6

(वर्ष 2023–24)

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी
(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

मुख्य संरक्षक : **श्री दीपक कुमार,** प्रमुख सचिव, बेसिक शिक्षा, उ०प्र० शासन।

संरक्षक : **श्री विजय किरन आनन्द,** महानिदेशक (स्कूल शिक्षा), उ०प्र० तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ०प्र० सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।

निर्देशन : **डॉ० अंजना गोयल,** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उ०प्र०, लखनऊ।

परामर्श : **डॉ० पवन कुमार,** संयुक्त निदेशक(एस.एस.ए.), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उ०प्र०, लखनऊ, **श्रीमती दीपा तिवारी,** उप शिक्षा निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उ०प्र०, लखनऊ।

समन्वयन : **डॉ० ऋचा जोशी,** निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

समीक्षा : **डॉ० रामसुधार सिंह** (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, यू०पी० कालेज, वाराणसी), **प्रो० सत्यपाल शर्मा** (प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०), **डॉ० उदय प्रकाश** (एसो०प्रो०, श्री बलदेव पी०जी० कालेज, बड़ागाँव, वाराणसी), **डॉ० सुनीता सिंह** (एसो०प्रो०, शिक्षा संकाय बी०एच०यू०), **डॉ० सत्य प्रकाश पाल** (असि०प्रो० हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०), **श्रीमती गायत्री,** शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

संपादन : **डॉ० प्रदीप जायसवाल,** शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी, **श्री देवेन्द्र कुमार दुबे,** शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

सहयोग : **डॉ० महेन्द्र द्विवेदी** (सलाहकार, यूनीसेफ, लखनऊ), **डॉ० शुभ्रांशु उपाध्याय** (सलाहकार, यूनीसेफ, लखनऊ)।

लेखक मंडल : **डॉ० शीला सिंह**, (प्र०अ०, रा०हा० बढ़ैनी कलाँ वाराणसी), **डॉ० सुषमा गुप्ता** (प्र०अ०, रा०हा० सिरसा, प्रयागराज), **डॉ० मनीष कुमार यादव** (प्रवक्ता, सी०टी०ई०, वाराणसी), **श्री दिनेश यादव** (प्रवक्ता, डायट, सोनभद्र), **डॉ० वन्दना सिंह** (प्रवक्ता, डायट, कौशाम्बी), **श्री जितेन्द्र गुप्ता** (प्रवक्ता, डायट, संत कबीर नगर), **डॉ० अर्पणा श्रीवास्तव**, (प्रवक्ता, रा०बा०इ०का० मलदहिया, वाराणसी), **डॉ० चंचल** (प्रवक्ता, बा०इ०का० कोपागंज, मऊ), **डॉ० रविशंकर तिवारी** (प्रवक्ता, व०से०सं०इ०का० महेवा कला, प्रयागराज), **श्री सत्यजीत कुमार द्विवेदी** (प्र०अ०, उ०प्रा०वि०, प्रधान टोला, कुशीनगर), **श्री अखिलेश्वर प्रसाद गुप्ता** (एस०आर०जी० वाराणसी), **श्री रंजन कुमार पाठक** (ए०आर०पी० बड़ागाँव, वाराणसी), **श्री अमिताभ मिश्रा** (ए०आर०पी०, का०वि०पी०, वाराणसी), **श्रीमती अनीता शुक्ला** (स०अ०, क०वि० रुस्तमपुर, वाराणसी), **श्रीमती शालिनी सिंह** (स०अ०, उ०प्र०वि० मंगारी, वाराणसी), **श्री दुर्गेश नन्दन त्रिपाठी** (स०अ०, क०वि० कोइलीपुरवा, लखीमपुर खीरी), **श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी** (स०अ०, क०वि० धरतीडोलवा, सोनभद्र), **श्री मिथिलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० पचेवरा, मीरजापुर), **श्री शैलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० कैनाल बस्ती, मीरजापुर), **श्रीमती माया सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० रसूलपुर रिठौरी, बुलंदशहर), **डॉ० नमिता सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० चिरईगाँव, वाराणसी), **डॉ० प्रतिभा मिश्रा** (स०अ०, उ०प्रा०वि० पाली, भदोही), **श्रीमती अर्चना सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० पतेरवाँ, वाराणसी), **श्रीमती नीलम सिंह** (स०अ०, क०वि० वारीगाँव, भदोही), **सुश्री अनुराधा कुमारी** (स०अ०, प्रा०वि० गोगहरा, चंदौली), **श्रीमती रेखा वर्मा** (स०अ०, प्रा०वि० सेहमलपुर, वाराणसी), **श्री अनुज प्रताप पाण्डेय** (स०अ०, प्रा०वि० हाजीपट्टी, मऊ), **डॉ० नितिकेश यादव** (स०अ०, क०वि० चकवाँ, जौनपुर) **श्रीमती रश्मि रूपम** (स०अ०, क०वि० उसरौड़ी, चंदौली), **श्रीमती दीपशिखा** (स०अ०, क०वि० सुरहाँ, मीरजापुर)।

तकनीकी सहयोग एवं रूपायन : **श्री विकास शर्मा** (स०अ०, उ०प्रा०वि० नगला सूरजभान कम्पोजिट, आगरा), **श्री विनय शंकर पाण्डेय** (एस०आर.जी० भदोही), **श्री वैभवकान्त श्रीवास्तव** (स०अ०, क०वि० सुल्तानपुर, आजमगढ़), **तौरीक अहमद** (क०वि० भग्गोभार, सिद्धार्थनगर), **श्री अजीत कुमार कौशल** (क०स०रा०हि०सं०, उ०प्र०, वाराणसी)।

आवरण : **श्री रविकान्त श्रीवास्तव** (स०अ०–कला, रा०इ०कॉ०, प्रयागराज)।

आभार : **शिक्षक संदर्शिका के विकास में अनेक पुस्तकों का अवलोकन व पाठ्य–सामग्री, विभिन्न स्रोतों से लिए गए चित्रों आदि का उपयोग किया गया है। हम उनके प्रति आभारी हैं।**

निदेशक की कलम से

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अवसर देते हुए वैश्विक स्तर पर स्थापित करना है। शिक्षा का सार्वभौमीकरण करते हुए बच्चों का सर्वांगीण विकास करना एक महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा बेहतर राष्ट्र की संकल्पना में अहम पक्ष है। समय के सापेक्ष प्रगति गुणवतापूर्ण शिक्षा पर ही निर्भर है। अतः यह हम सभी का दायित्व है कि त्रुटियों का आकलन कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाए। इस दृष्टि से भाषा की बेहतर समझ तथा प्रयोग अनिवार्य है। बच्चों की भाषायी दक्षताओं का विकास उन्हें अन्य विषयों को भी समझने में सहायता देता है। कल्पना, अनुमान, तर्क, विचारों की स्पष्टता इस दिशा में बच्चों को सक्षम बनाती हैं।

विद्यालयी शिक्षा में बच्चों की रुचि भाषायी दक्षताओं में सहज ही होती है। वे सुनने बोलने, पढ़ने और लिखने की दक्षताओं में पारंगत होते हैं तथा उनकी समझ और भी बेहतर होती है। साथ ही व्याकरण और रचनात्मक कौशल उन्हें समस्या समाधान, तर्क, चिन्तन और विचार प्रकट करने में सहायक होती हैं।

बच्चों को केन्द्र में रखकर उनके अधिगम, आकलन और संप्राप्ति पर कार्य किया जाना अत्यन्त सुखद है। शिक्षकों के लिए 50 कार्यदिवसों की शिक्षण योजना बच्चों के उपचारात्मक (रिमीडियल) कक्षा शिक्षण की दिशा में नवीन और सार्थक कदम है। इन योजनाओं पर आधारित कार्यपत्रक बनाए गए हैं, जिनकी संख्या प्रतियोजना 2 से 5 कार्यपत्रक हैं जिन्हें कार्यपुस्तिका के रूप निबद्ध किया गया है। कार्यपुस्तिका बच्चों के लिए है जो दो भागों में है– पहले भाग में उपचारात्मक शिक्षण पर आधारित कार्यपत्रक और दूसरे भाग में पाठ आधारित कार्यपत्रक हैं। प्रश्नों की प्रकृति सरल है और बच्चों की अभिरुचि को ध्यान में रखकर बनाई गई है। कार्यपत्रकों में रंगीन एवं आकर्षक चित्र बने हुए हैं जो सहज रूप से बच्चों के लिए प्रश्नों को हल करने में आनन्ददायक वातावरण बनाने में सक्षम है।

इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका के विकास से जुड़े विभिन्न जनपदों के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रवक्ताओं, बाह्य विशेषज्ञों एवं शिक्षकों की सराहना करती हूँ , जिन्होंने अपने सतत् एवं अथक परिश्रम से इस संदर्शिका के विकास में सहयोग प्रदान किया है। साथ ही इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका के निर्देशन, समन्वय एवं सम्पादन हेतु राज्य हिन्दी संस्थान उ०प्र०, वाराणसी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका में विभिन्न स्त्रोतों से सामग्री ली गयी है, उन सभी के प्रति भी मैं अभार व्यक्त करती हूँ। इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका को और अधिक उपयोगी बनाने के संबंध में आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

(डा० अंजना गोयल)
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
उ०प्र०, लखनऊ

भूमिका

वर्तमान परिदृश्य की चुनौतियों के सापेक्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षा व्यवस्था में कई बदलाव किए गए हैं। परिस्थितिजन्य कारणों से बच्चों में आए लर्निंग गैप (अधिगम अंतराल) को कम करके अपेक्षित दक्षताओं को प्राप्त करने हेतु अवसर प्रदान करने के साथ ही कक्षा अनुरूप निर्धारित अधिगम संप्राप्ति सुनिश्चित कराना एक बड़ी चुनौती है।

इस क्रम में शिक्षकों और बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना आवश्यक है। इससे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सकारात्मक वातावरण सृजन किए जाने में सहायता मिलती है। बच्चे विद्यालय की सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं में आत्मविश्वास के साथ भाग लेंगे तथा कक्षावार निर्धारित अधिगम संप्राप्ति को सरलतापूर्वक प्राप्त कर लेंगे।

इस परिप्रेक्ष्य में उच्च प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 6 से 8) के शिक्षकों के लिए शिक्षक संदर्शिकाओं एवं बच्चों के लिए कार्यपुस्तिकाओं का विकास किया गया है।

बच्चों को केन्द्र में रखकर तैयार की गई शिक्षक संदर्शिकाएँ शिक्षकों को हिन्दी भाषा की नई शिक्षण विधियों और गतिविधियों आदि से परिचित कराएँगी। कार्यपुस्तिकाओं को दो भागों में बाँटा गया है– पहले भाग में बच्चों के उपचारात्मक शिक्षण हेतु 50 दिवसीय शिक्षण योजना आधारित कार्यपत्रक हैं तथा दूसरे भाग में पाठ आधारित कार्यपत्रक हैं। ये कार्यपुस्तिकाएँ अभिभावकों की सहभागिता भी सुनिश्चित करेंगी साथ ही वे बच्चों की शैक्षिक प्रगति पर शिक्षकों से संवाद भी कर सकेंगे।

शिक्षकों के लिए

आप सभी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से परिचित हैं। शिक्षा व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण बदलाव हो रहे हैं। कोविड के कारण बच्चों में आये लर्निंग गैप को न्यूनतम करने के प्रयास किये जा रहे हैं। इसी क्रम में शिक्षकों के लिए नई–नई शिक्षण सामग्रियों का निर्माण किया जा रहा है, जिससे कक्षा अनुरूप बच्चों के न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त करने में सहायता मिल सके। आप से अपेक्षा है कि संदर्शिका की मदद से शिक्षण के दौरान विषयवस्तु के अनुसार आडियो/विडियो/अन्य शिक्षण अधिगम सामग्री का चयन एवं उपयोग उपलब्धता के अनुसार कर लें। इस आशय के साथ यह संदर्शिका आपके भाषा शिक्षण में सहयोग करने हेतु उपलब्ध करायी जा रही है। एक शिक्षक के रूप में आपसे यह अपेक्षा है कि......

- कक्षा में उन बच्चों की पहचान करें जिनका न्यूनतम अधिगम स्तर कक्षा के अनुरूप नहीं है, जिससे कक्षा में उनकी अधिक मदद हो सके।
- संदर्शिका में जो शिक्षण–योजना दी गई है, कक्षा–शिक्षण में उसी विधि का प्रयोग करें।
- यथास्थान/यथासमय कार्यपत्रकों का प्रयोग करें।
- बच्चे जब कार्यपुस्तिका पर कार्य करें तब उनका अवलोकन अवश्य करें।
- कार्यपत्रकों की जाँच कर आवश्यक फीडबैक बच्चों को दें।
- बच्चों से बातचीत करें कि उन्हें विषयवस्तु को समझने में क्या और कहाँ परेशानी हो रही है।

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

50 दिवसीय उपचारात्मक शिक्षण योजना

दिवस	सप्ताह	शिक्षण की कार्ययोजना	पृष्ठ संख्या
1	1	बच्चे चित्र देखकर समझते हैं और उस पर अपने विचार साझा कर पाते हैं।	10
2	1	बच्चे अपने से भिन्न परिवेश की भाषा, रहन सहन, खान–पान एवं परिधानों पर बात कर लेते हैं एवं स्वयं को उससे जोड़ लेते हैं।	13
3	1	बच्चे त्योहार आदि पर अपने विचार व्यक्त करते और लिखते हैं।	16
4	1	दिये गये शब्दों का बच्चे शुद्ध रूप से उच्चारण करते हुए अंतर बताते हैं।	18
5	1	बच्चे अनुभव, तर्क, समझ के आधार पर आस–पास की घटनाओं पर विचार व्यक्त करते हैं।	20
6	2	बच्चे संज्ञा शब्दों की पहचान कर लेते हैं।	22
7	2	बच्चे विभिन्न (राष्ट्रीय और धार्मिक) पर्वों के बारे में बताते हैं।	25
8	2	ध्यानपूर्वक सुनते हुए किसी घटना/कहानी पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर लेते हैं।	29
9	2	बच्चे कविता को हाव–भाव एवं लय से प्रस्तुत करते हैं। गलत क्रम में लिखी हुई कविता की पंक्तियों को सही क्रम में लगाते हैं तथा दी गई पंक्तियों के आधार पर नई कविता की रचना करते हैं।	33
10	2	बच्चे कहानी के आधार पर सही चित्र का मिलान करके नई कहानी लिख लेते हैं।	35

11	3	बच्चे अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों का साक्षात्कार कर लेते हैं।	37
12	3	बच्चे एकवचन व बहुवचन में अंतर कर लेते हैं।	39
13	3	बच्चे पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का प्रयोग करते हैं।	41
14	3	बच्चे कविता को हाव–भाव और लय के साथ प्रस्तुत करते हैं तथा कविता पर चर्चा करने के बाद दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हैं।	44
15	3	बच्चे कहानी/कविता/गद्य/पद्य को उपयुक्त उतार–चढ़ाव, गति–प्रवाह के साथ पढ़ते और सुनाते हैं।	47
16	4	बच्चे संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर लेते हैं।	50
17	4	बच्चे विशेषण शब्दों को पहचान लेते हैं और अपने वाक्यों में प्रयोग कर लेते हैं।	52
18	4	बच्चे चित्र देखकर/दिए गए शब्दों के आधार पर अपनी भाषा में कहानी लिख लेते हैं।	54
19	4	बच्चे देवनागरी लिपि पढ़कर लिखते हैं।	56
20	4	बच्चे समाचार–पत्र पढ़कर उस पर अपने विचार व्यक्त कर लेते हैं।	59
21	5	बच्चे स्वर, व्यंजन और संयुक्ताक्षर को समझते हैं व बोलचाल में उनका प्रयोग कर लेते हैं।	61
22	5	बच्चे बोलचाल में अनुस्वार, अनुनासिक शब्दों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हैं एवं समझते हैं।	65
23	5	बच्चे स्वयं सार्थक शब्द बना लेते हैं।	67
24	5	बच्चे अमात्रिक शब्दों को पढ़ व लिख लेते हैं।	70

25	5	बच्चे मात्राओं को पहचान लेते हैं और मात्रिक शब्दों को पढ़ एवं लिख लेते हैं।	72
26	6	बच्चे क्रिया शब्दों की पहचान कर लेते हैं और वाक्यों में उनका प्रयोग कर लेते हैं।	74
27	6	बच्चे विलोम शब्दों को बताते हैं।	76
28	6	बच्चे पर्यायवाची शब्दों की पहचान कर लेते हैं। इन शब्दों का दैनिक जीवन में प्रयोग भी करते हैं।	78
29	6	बच्चे चित्र/पोस्टर देखकर एवं कविता, कहानी सुनकर अपनी कल्पना शक्ति का विकास करते हैं।	80
30	6	बच्चे सुनी व पढ़ी हुई रचनाओं की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों के शीर्षक आदि के विषय में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं और अपने विचार रखते हैं।	83
31	7	बच्चे गद्य/पद्य में निहित भावों को समझकर अपनी भाषा में व्यक्त कर लेते हैं और लिख लेते हैं।	85
32	7	बच्चे दैनिक जीवन की घटनाओं से संबंधित विषय द्वारा कहानी का निर्माण कर लेते हैं।	87
33	7	बच्चे दी गई कहानी को पढ़ते हुए उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देते हैं तथा कहानी को क्रम में लिख लेते हैं।	89
34	7	बच्चे स्वतंत्र लेखन कार्य करते हैं, तथा पाठ्य–पुस्तक में दिए गए अभ्यास पर कार्य करते हैं।	91
35	7	बच्चे समाचार पत्र पढ़ लेते हैं और अपने विचार व्यक्त कर लेते हैं। नई जानकारियों पर चर्चा करते हैं और समाचार–पत्र निर्माण कर लेते हैं।	93
36	8	बच्चे कहानी के द्वारा अपने शब्दकोश में वृद्धि करते हैं।	96
37	8	बच्चे सामान्य बातचीत व लेखन में लोकोक्तियों एवं मुहावरे का प्रयोग कर लेते हैं।	99

38	8	बच्चे अपने विचारों को अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर लेते हैं।	101
39	8	बच्चे दिए गए पात्रों के आधार पर नयी कहानी बना लेते हैं।	103
40	8	बच्चे सार्थक शब्दों को समझते हैं तथा उनकी रचना कर लेते हैं।	105
41	9	बच्चे विराम चिह्न की पहचान कर लेते हैं तथा इसका लेखन में प्रयोग कर लेते हैं।	107
42	9	बच्चे शब्दों में प्रयुक्त होने वाले उपसर्गों की पहचान कर लेते हैं।	110
43	9	बच्चे विभिन्न प्रकार के पत्र लिख लेते हैं।	112
44	9	बच्चे स्वयं भ्रमण किए गए मेले/प्रदर्शनी, दर्शनीय स्थल आदि का वर्णन अपने शब्दों में कर लेते हैं।	114
45	9	बच्चे शब्दों में आए प्रत्यय की पहचान करते हैं।	116
46	10	बच्चे दिए गए अनुच्छेद/गद्यांश में से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया की पहचान कर लिख लेते हैं।	118
47	10	बच्चे विभिन्न सामाजिक मुद्दो, जैसे– बालश्रम, शिक्षा, स्वच्छता के महत्व पर अपने विचार लिखकर व्यक्त कर लेते हैं।	121
48	10	बच्चे वाक्यों का निर्माण एवं अनुच्छेद लेखन करते हैं।	123
49	10	बच्चे अनुच्छेद को पढ़कर उसे अपने शब्दों में लिखते हैं।	125
50	10	बच्चे संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया–विशेषण शब्दों की सहायता से अनुच्छेद लिखते हैं।	127

सप्ताह– 1

दिवस–01

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे चित्र देखकर समझते हैं और उस पर अपने विचार साझा कर पाते हैं।

सहायक सामग्री– वीडियो क्लिप (खेतों की जुताई करते हुए किसान का चलचित्र), खेत–खलिहान, ट्रैक्टर, हल के चित्र, पोस्टर आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक के लिए निर्देश–

शिक्षक कक्षा में अधिगम सामग्री बच्चों को दिखाते हुए कुछ इस प्रकार के प्रश्न करेंगे–

प्रश्न– बच्चों! हम जो भोजन करते हैं उसमें प्रयुक्त अनाज कहाँ से मिलता है?

संभावित उत्तर– खेतों से।

प्रश्न– खेती करने वाले को क्या कहते हैं?

संभावित उत्तर– किसान।

प्रश्न– खेती कैसे होती है? इसकी प्रक्रिया बताइए।

संभावित उत्तर– कुछ बच्चे प्रक्रिया बताएँगे।

बच्चों को दो समूहों में विभाजित करेंगे। शिक्षक बच्चों को खेतों में हो रहे काम, जैसे– जुताई, बुवाई, निराई और कटाई होते समय की कुछ वीडियो क्लिप दिखाएँगे। इसके बाद खेतों से संबंधित पोस्टर बच्चों को दिखाएँगे और इस पर उन्हें अपने अपने समूह में चर्चा करने को कहेंगे तथा चर्चा के लिए बिंदु निम्नलिखित हो सकते हैं, जैसे–

- कुछ फसलों के नाम बताइए?
- कौन सी फसल किस ऋतु में बोई जाती है?
- किस फसल से क्या–क्या लाभ होते हैं?
- खेती में कौन–कौन से औजार प्रयुक्त होते हैं?
- खेती से जुड़े अपने किसी अनुभव को एक दूसरे को सुनाएँ?

गतिविधि– समूह चर्चा

शिक्षक बच्चों को दो समूहों में विभाजित करेंगे। अब बच्चों से सरल संवाद स्थापित करके सभी को बोलने का मौका देंगे।

शिक्षक– बच्चो! पोस्टर में जुताई के साधनों– ट्रैक्टर एवं हल–बैल बने हुए हैं, इन दोनों चित्रों में खेती की कौन सी प्रक्रिया सरल है?

शिक्षण के मध्य

- शिक्षक कक्षा में हुई चर्चा पर विराम लगाते हुए बच्चों को पोस्टर देखने को बोलेंगे।
- शिक्षक हर बच्चे से चित्र पर उसके विचार जानने का प्रयास करेंगे।
- शिक्षक प्रश्नों के माध्यम से बच्चों की समझ विकसित करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से चित्र पर आधारित चर्चा का निष्कर्ष बताते हुए विभिन्न प्रकार की खेती के बारे में भी बताएँगे। यह भी चर्चा करेंगे कि कौन सी विधि अधिक खर्चीली है और कौन सी विधि कम खर्चीली है।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को गृहकार्य के रूप में प्रोजेक्ट कार्य करने को दें। बच्चों से विभिन्न फसलों के चित्र अपनी पुरानी पुस्तकों, अखबार की कटिंग या स्वयं से बनाकर लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 1

दिवस–02

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अपने से भिन्न परिवेश की भाषा, रहन–सहन, खान–पान एवं परिधानों पर बात करते हैं एवं स्वयं को उससे जोड़ते हैं।

सहायक सामग्री– विभिन्न प्रांतों की वेशभूषा, खान–पान और रहन–सहन से संबंधित चित्र, पोस्टर, विभिन्न भाषाओं का संक्षिप्त परिचय युक्त चार्ट, भारत का नक्शा।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक भारत के नक्शे पर अलग–अलग राज्यों और उनकी भाषा, खान–पान और वेश–भूषा पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से चर्चा करेंगे।

शिक्षक के प्रश्न	संभावित उत्तर
(क) (भारत के नक्शे पर संकेत करके) कश्मीर में अत्यधिक ठंड पड़ती है, वहाँ के लोग कैसे कपड़े पहनते हैं।	→ मोटा, ऊनी, गर्म
(ख) तमिलनाडु समुद्र तट से लगा है, वहाँ के खान–पान के बारे में बताइए।	→ चावल, इडली, डोसा
(ग) उत्तर प्रदेश में कौन सी भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं?	→ हिन्दी, भोजपुरी, बुन्देली, अवधी, ब्रज

हमारे देश में विभिन्न राज्यों की भाषाएँ, वेशभूषा, खान–पान अलग–अलग हैं यह हमारी राष्ट्रीय एकता को भी प्रदर्शित करता है। शिक्षक राष्ट्रीय एकता के बारे में बच्चों के साथ विस्तार से चर्चा करेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक कक्षा के बच्चों के तीन समूह बनाएँगे। प्रत्येक समूह अलग अलग परिवेश आधारित भाषा, रहन–सहन, खान–पान और वेश–भूषा पर अपने विचार निम्नवत लिखेंगे–

	समूह क	समूह ख	समूह ग
	पहाड़ी/पर्वतीय प्रदेशों का परिवेश	मैदानी प्रदेशों का परिवेश	समुद्र तटीय प्रदेशों का परिवेश
भाषा खान–पान वेशभूषा			

शिक्षण के अंत में

भिन्न–भिन्न परिवेशों की भाषा, वेश–भूषा और खान–पान भिन्न–भिन्न होते हैं। हमारे वातावरण का प्रभाव भी इन पर पड़ता है।

प्रदत्त कार्य– बच्चे अपने गाँव/शहर/आसपास के परिवेश के अलग–अलग बिन्दुओं (भाषा, खानपान, रहन–सहन) की चार–चार विशेषताएँ लिखकर लाएँगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 1

दिवस–03

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे त्योहार आदि पर अपने विचार व्यक्त करते और लिखते हैं।

सहायक सामग्री– विभिन्न त्योहारों के चित्र, कार्यपत्रक, पुस्तक की कहानी, जो किसी त्योहार पर हो, स्वनिर्मित कहानी आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से कुछ इस प्रकार के प्रश्न करेंगे–

शिक्षक– अभी कुछ दिन पूर्व कौन सा त्योहार बीता है? (कम से कम पाँच या उससे अधिक प्रश्न बच्चों से पूछेंगे और उनके उत्तर श्यामपट्ट पर लिखेंगे)

बच्चों के संभावित उत्तर– दशहरा, ईद, होली, दीपावली, लोहड़ी, पोंगल, ओणम आदि।

शिक्षक– उक्त त्योहारों में कौन सा त्योहार आपको अच्छा लगता है? (कम से कम पाँच या उससे अधिक प्रश्न बच्चों से पूछें और उनके उत्तर श्यामपट्ट पर लिखेंगे)।

बच्चों के संभावित उत्तर– दीपावली, होली, ईद, दशहरा, लोहड़ी, ओणम, पोंगल आदि।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक द्वारा किसी त्योहार पर आधारित कहानी को हाव–भाव के साथ पढ़ा जाएगा और बच्चों द्वारा पढ़े गए शब्दों पर ध्यान से उँगली रखते हुए सुना जाएगा जिसका शिक्षक द्वारा अवलोकन किया जाएगा। शिक्षक बीच–बीच में कुछ प्रश्न करेंगे, जैसे–

- आपके भाई का क्या नाम है?
- आपने घर को कैसे सजाया?

सभी बच्चे कहानी को पढ़ेंगे और जिन शब्दों को पढ़ने में कठिनाई आएगी उन्हें बच्चे लिख लेंगे, शिक्षक बाद में उन शब्दों को पढ़कर सुनाएँगे।

शिक्षक द्वारा उक्त क्रिया का आकलन और अनुसमर्थन किया जाएगा। पठन के बाद शिक्षक कुछ प्रश्न कार्यपत्रक के अनुसार पूरा कराएँगे, आप स्वयं भी प्रश्न पूछ सकते हैं, जैसे–

- दशहरा में आपको क्या अच्छा लगता है?
- लोहड़ी कब मनाई जाती है?

शिक्षण के अंत में

बच्चों की समझ को परखा जाए कि वे त्योहार के बारे में क्या सोचते हैं?

- त्योहार में आपको कौन से कार्य करने पड़ते हैं, लिखिए।
- ओणम कहाँ का त्योहार है?

प्रदत्त कार्य–

- अपने मनपसंद त्योहार पर पाँच पंक्तियाँ लिखकर लाइए।
- विद्यालय में हम कौन–कौन से पर्व मनाते हैं ?

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 1

दिवस–04

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे दिये गये शब्दों को शुद्ध रूप से उच्चरित करते हुए अंतर बताते हैं।

सहायक सामग्री– कुछ शब्द कार्ड, जो समध्वनि भिन्नार्थक होंगे।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों के बीच कुछ शब्द कार्ड, जो समान ध्वनि के होंगे पढ़ने के लिए देंगे। शिक्षक स्वयं उन्हीं शब्दों को शुद्ध रूप से उच्चारण करते हुए बच्चों को सुनाएँगे, जैसे–

शाम	श्याम
बौना	बोना
दिया	दीया
वास	बास
संकर	शंकर
चमक	नमक
नीर	नीड़
रथ	पथ

बच्चों से पुनः इन शब्दों का उच्चारण करने को कहेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को दिये गये शब्दों के उच्चारण के बाद उनके अर्थ पर चर्चा करेंगे। प्रत्येक मिलते–जुलते शब्दों के अर्थ को बताएँगे और पुनः बच्चों से शब्दों के अर्थ को दुहरवाएँगे। जिन बच्चों को उच्चारण संबंधी समस्या आ रही हो उन पर विशेष ध्यान देंगे। इसके पश्चात बच्चों से कार्यपत्रकों पर कार्य करवाएँगे। शिक्षण के बाद कार्यपत्रक पर दिए गए शब्दों के अर्थ को बताते हुए, कार्यपत्रकों की जाँच करेंगे। पुनः जिन बच्चों को समस्याएँ आ रही होंगी उनका उचित समाधान करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक समान ध्वनि वाले शब्दों का दुहराव कराते हुए अन्य शब्दों को खोजने व लिखने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– बच्चों को श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखकर देंगे और उन्हें इन शब्दों का शुद्ध उच्चारण अभ्यास और उनके अलग अर्थ घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 1

दिवस–05

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अनुभव, तर्क, समझ के आधार पर आस–पास की घटनाओं पर विचार व्यक्त करते हैं।

सहायक सामग्री– दिनचर्या/प्रकृति/समसामयिक घटना इत्यादि से संबंधित पोस्टर।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

1. शिक्षक सहज वातावरण में बच्चों से बातचीत करेंगे ।
2. कुछ समसामयिक घटनाओं पर बातचीत करेंगे।

नीचे दिए गए अनुच्छेद के आदर्श वाचन के उपरांत बंद एवं खुले छोर के प्रश्न किये जाएँगे।

कल रात तेज आँधी आई थी। खूब तेज–तेज हवाएँ चल रही थीं। गाँव के सभी लोग जग गए और शोर होने लगा। आँधी के साथ पानी की बौछार भी थी। श्याम के चबूतरे पर लगा जामुन का पेड़ उखड़ गया। कल्लू का छप्पर उड़ गया। प्रधान जी के ओसारे में बँधी गायों ने रस्सी तुड़ा ली और इधर–उधर भागने लगीं। बहुत देर बाद आँधी का चलना रुका और सब कुछ शान्त हुआ। ग्रामीण सुबह उठकर एक बार फिर से अपने–अपने काम में लग गये ।

1. भूकम्प से क्या–क्या हानियाँ हो सकती हैं?
2. आँधी का क्या प्रभाव दिखता है?
3. बाढ़ से क्या लाभ व हानि होती है?

उपर्युक्त प्रश्नों की सहायता से चर्चा/बातचीत की जाएगी ।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक कक्षा में बच्चों को चार–चार के समूह में बैठाकर क्रमानुसार संवाद करेंगे–

- शिक्षक – आँधी के आने पर क्या–क्या हुआ ?
- समूह क– चबूतरे पर लगा जामुन का पेड़ उखड़ गया।
- समूह ख– कल्लू का छप्पर उड़ गया।
- समूह ग– गायों ने रस्सी तुड़ा ली और इधर–उधर भागने लगीं।
- समूह घ– सभी लोग जग गए।

गतिविधि–

शिक्षक के द्वारा निम्नलिखित प्रश्नों की मदद से बातचीत की जाएगी और बच्चों को स्वतन्त्र रूप से अपने विचार रखने को कहा जाएगा।

क– यदि पेड़ उखड़ जाए तो क्या–क्या हो सकता है?

ख– समसामयिक घटना के उपरान्त किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

ग– किसी समसामयिक घटना पर अपने अनुभव बताइए।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को निम्नलिखित शब्दों की सहायता से वाक्य रचना करने के लिए कहेंगे– **चबूतरा, छप्पर, ओसारा, ग्रामीण**

प्रदत्त कार्य– शिक्षक द्वारा बच्चों के परिवेश में होने वाली घटनाओं पर चर्चा करते हुए गृहकार्य के रूप में किसी घटना को लिखने को कहा जाएगा।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–06

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे संज्ञा शब्दों की पहचान कर लेते हैं।

सहायक सामग्री– परिवेश से संबंधित पोस्टर, कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को ग्रामीण–परिवेश का एक पोस्टर दिखाएँगे और बच्चों से चर्चा–परिचर्चा करते हुए प्रश्न करेंगे और सभी बच्चों को गतिविधि में शामिल करने का प्रयास करेंगे–

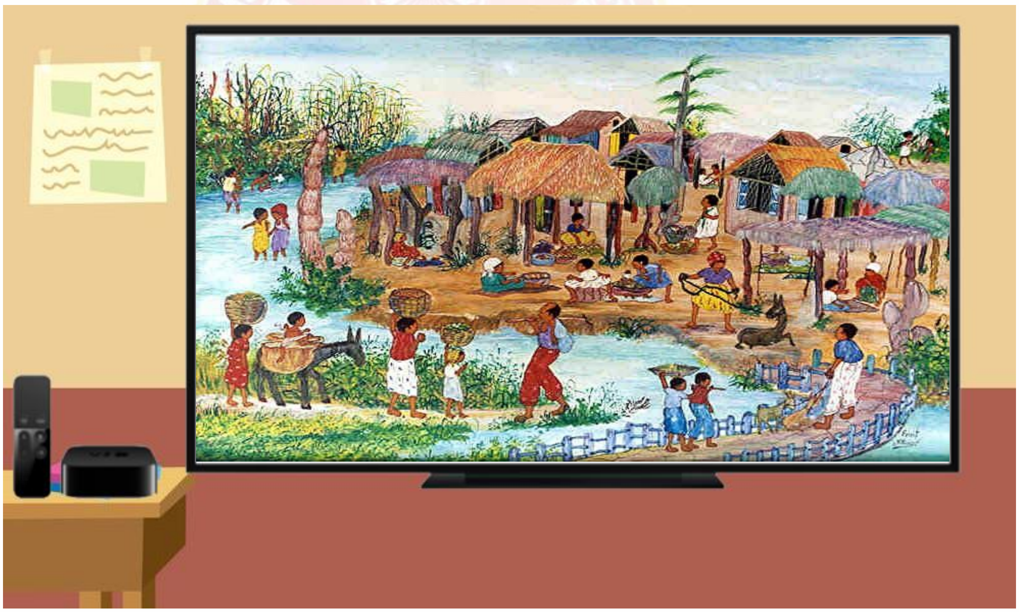

1– आपको को इस चित्र में कौन–कौन सी वस्तुएँ दिखाई दे रही हैं?

2– चित्र में बच्चे क्या कर रहे हैं?

3– जब आप खेलते हैं तो कैसा महसूस करते हैं?

4– चित्र में किन–किन स्थानों को दिखाया गया है?

शिक्षक चित्र पर चर्चा करते हुए बच्चों के पूर्वज्ञान को जानने और संज्ञा की अवधारणा स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं ।

गतिविधि 1–

समूह कार्य– शिक्षक कक्षा को दी गई सारणी के अनुसार पाँच भागों में बाँट देंगे और समूह के नाम के अनुसार दिए गए अनुच्छेद से शब्दों को छाँटकर लिखने को कहेंगे ।

समूह 1– व्यक्ति	समूह 2– वस्तु	समूह 3– स्थान	समूह 4– प्राणी	समूह 5– भाव

एक मैना थी। वह नीम के खोखल में रहती थी। नीम का पेड़ बगीचे में था। बगीचे में एक नल लगा था। मैना रोज बगीचे में दाना चुगती और नल के पास पानी पीती थी। एक दिन बड़ी गर्मी थी। मैना को जोर से प्यास लगी। मैना उड़ कर नल के पास गई और चोंच आगे बढाई, लेकिन नल के पास तो सूखा पड़ा था। निराश होकर मैना वहाँ से उड़ी और आम के पेड़ पर बैठ गई। वहाँ उसे एक तोता मिला। मैना ने पूछा– भाई मुझे बड़ी जोर की प्यास लगी है, पानी कहाँ मिलेगा?

नोट– शिक्षक समूह कार्य के दौरान सभी समूहों का अवलोकन करेंगे और यह जानने का प्रयास करेंगे कि क्या सभी बच्चे सक्रिय हैं। अंत में शिक्षक यह बताने का प्रयास करेंगे कि नाम वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। शिक्षक सभी समूहों को

अब संज्ञा की परिभाषा बनाने के लिए कहेंगे और स्वयं मार्गदर्शक की भूमिका में रहेंगे।

गतिविधि 2–

शिक्षक सभी बच्चों को कार्यपत्रक देंगे और पत्रक में दिए निर्देश के अनुसार कार्यपत्रक को भरने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक संज्ञा की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उसकी परिभाषा बताएँगे।

"किसी पशु–पक्षी, वस्तु, स्थान, भाव, अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं।"

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–07

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विभिन्न (राष्ट्रीय और धार्मिक) पर्वों के बारे में बताते हैं।

सहायक सामग्री– राष्ट्रीय और धार्मिक पर्वों के चित्र और वीडियो क्लिप।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक सर्वप्रथम बच्चों को चित्र दिखाकर उनसे प्रश्न करेंगे।

शिक्षक– (धार्मिक पर्वों का चित्र दिखाते हुए) इस चित्र में आपको क्या–क्या दिखायी दे रहा है?

संभावित उत्तर– होली, दीपावली, ईद, लोहड़ी, क्रिसमस)

गतिविधि– कक्षा के बच्चों को पाँच समूहों में विभक्त करके प्रत्येक समूह को एक त्योहार का चित्र दे दिया जाएगा। समूह को आपस में चर्चा करने को कहा जाएगा कि ये त्योहार कब मनाए जाते हैं और इन त्योहारों में क्या–क्या किया जाता है। प्रत्येक समूह को आपस में चर्चा करने के लिए कहा जाएगा और समूह का एक सदस्य अपने समूह के विचार कक्षा में बताएगा।

शिक्षक समूह से प्राप्त विचारों पर चर्चा करते हुए समाजिक त्योहार कब मनाये जाते हैं, कैसे मनाये जाते हैं और क्यों मनाये जाते हैं, इस पर अपनी बात रखेंगे।

समूह 1– होली (समूह एक के द्वारा होली पर अपने विचार व्यक्त करने के बाद शिक्षक के द्वारा होली के विषय में बताया जाएगा।)

शिक्षक– होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्त्वपूर्ण त्योहार है। यह रंगों तथा हँसी–खुशी का त्योहार है। इसमें लोग एक–दूसरे को रंग, गुलाल लगाते हैं और एक–दूसरे के घर मिलने जाते हैं।

समूह 2– दीपावली (समूह एक के द्वारा दीपावली पर अपने विचार व्यक्त करने के बाद शिक्षक के द्वारा दीपावली के विषय में बताया जाएगा।)

शिक्षक– श्री राम चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण करने के बाद अयोध्या वापस लौटे थे, जिसके उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को दीपावली का पावन पर्व मनाया जाता है। इस दिन सभी लोग अपने–अपने घरों और आस–पड़ोस में साफ–सफाई करते हैं और दीपक तथा मोमबत्तियाँ जलाते हैं।

समूह 3– लोहड़ी (समूह एक के द्वारा लोहड़ी पर अपने विचार व्यक्त करने के बाद शिक्षक के द्वारा लोहड़ी के विषय में बताया जाएगा।)

शिक्षक– यह उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध त्योहार है, यह मकर संक्रांति के एक दिन पहले मनाया जाता है। रात्रि में खुले स्थान में परिवार और आस–पास के लोग मिलकर आग जलाते हैं और उसके किनारे घेरा बनाकर रेवड़ी, मूँगफली आदि खाते हैं और बाँटते हैं।

समूह 4– ईद–उल फितर (समूह एक के द्वारा ईद–उल फितर पर अपने विचार व्यक्त करने के बाद शिक्षक के द्वारा ईद–उल फितर के विषय में बताया जाएगा।)

शिक्षक– ईद का पर्व रमजान के पवित्र माह में मनाया जाता है। यह त्योहार सभी आपस में मिल कर मनाते हैं और खुदा से सुख शांति, बरक्कत के लिए दुआएँ माँगते हैं। मक्का से मो0 पैगम्बर के प्रवास के बाद वापस पवित्र शहर मदीना लौटने पर ईद का उत्सव मनाया गया।

समूह 5– क्रिसमस (समूह एक के द्वारा क्रिसमस पर अपने विचार व्यक्त करने के बाद शिक्षक के द्वारा क्रिसमस के विषय में बताया जाएगा।)

शिक्षक– क्रिसमस जीसस क्राइस्ट के जन्म की खुशी में मनाया जाता है। जीसस क्राइस्ट को ईसाई धर्म का प्रवर्तक माना जाता है। यह त्योहार प्रतिवर्ष 25 दिसम्बर को मनाया जाता है।

सभी त्योहारों पर चर्चा करने के बाद शिक्षक सामाजिक त्योहारों के महत्त्व को बच्चों को समझाएँगे। इसके बाद शिक्षक राष्ट्रीय पर्वों से संबंधित चित्र बच्चों को दिखाएँगे और उस पर बच्चों से चर्चा करेंगे।

शिक्षण के मध्य

गतिविधि– कक्षा को तीन समूहों में बाँटकर प्रत्येक समूह को एक राष्ट्रीय पर्व के विषय में लिखने के लिए कहा जाएगा और समूह को यह निर्देश दिया जाएगा कि इन पर चर्चा करेंगे। प्रत्येक समूह से एक सदस्य अपने समूह के विचार पूरी कक्षा के सामने व्यक्त करेंगे और समूह के अन्य सदस्य यदि कोई बात छूट जाती है तो, उसे बताएँगे। समूह द्वारा अपने विचार व्यक्त करते समय शिक्षक मुख्य बातों को श्यामपट्ट पर लिखते जाएँगे और साथ ही बच्चों को पुनर्बलन भी देते रहेंगे।

समूह 1– गणतंत्र दिवस

शिक्षक– गणतन्त्र दिवस भारत का राष्ट्रीय पर्व है जो प्रतिवर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। इसी दिन सन् 1950 ई० को भारत का संविधान लागू किया गया था।

समूह 2–स्वतंत्रता दिवस

शिक्षक– हमारे देश में स्वतंत्रता दिवस हर वर्ष 15 अगस्त को मनाया जाता है, 15 अगस्त सन् 1947 ई० में भारत को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली थी। इसी दिन पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लाल किले पर भारत का तिरंगा झंडा फहराया था। इसी उपलक्ष्य में हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है।

समूह 3– गाँधी जयंती

शिक्षक– भारतीय स्वतत्रंता के महानायक राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गाँधी, जिन्हें बापू और महात्मा गाँधी के नाम से भी जाना जाता हैं, का जन्म 2 अक्टूबर सन् 1869 ई० को हुआ था। इनके जन्म दिवस को **विश्व अहिंसा दिवस** के रूप में मनाया जाता है।

गतिविधि– (राष्ट्रीय महत्त्व के पर्वों पर शिक्षक द्वारा चर्चा की जाएगी। इसके बाद कक्षा को दो समूहों में बाँटकर एक समूह को राष्ट्रीय पर्व और दूसरे समूह को सामाजिक त्योहार आवंटित कर देंगे। दोनों समूह से त्योहार मनाने की पूर्व तैयारी पर चर्चा करके उसकी लिखित रूपरेखा बनाने को कहा जाएगा, और उसका प्रस्तुतीकरण भी बच्चों द्वारा किया जाएगा।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को राष्ट्रीय और धार्मिक पर्वों का महत्त्व को बताते हुए दोनों में अंतर भी स्पष्ट करेंगे।

प्रदत्त कार्य– धर्मिक और राष्ट्रीय पर्वों से संबंधित चित्र का संकलन कर कक्षा में प्रदर्शित कराएँ। प्रत्येक अवसर पर गाए जाने वाले एक गीत का संकलन कर कक्षा में सुनवाएँ।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–08

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– ध्यानपूर्वक सुनते हुए किसी घटना/कहानी पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर लेते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, पालतू और जंगली जानवरों के चित्र।

शिक्षण–प्रकिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक सर्वप्रथम बच्चों को चित्र दिखाकर उनसे प्रश्न करेंगे।

शिक्षक– चित्र में आपको क्या क्या दिखाई दे रहा है?

संभावित उत्तर– मुर्गा, लोमड़ी, पत्थर, पेड़।

शिक्षक– कहानी में दिखाई देने वाले जानवर क्या कर रहे हैं?

संभावित उत्तर– अनुमान लगाकर उत्तर देंगे।

(शिक्षक कहानी का वाचन करने से पूर्व जंगली जानवरों व पालतू जानवरों के विषय में उनकी जानकारी एवं अनुभव जानने के लिए प्रश्न करेंगे)

शिक्षक– इस चित्र में दिख रहे जानवरों के अलावा कौन–कौन से जानवर आपने देखे हैं?

संभावित उत्तर– गाय, बैल, कुत्ता, बंदर, शेर, भालू आदि।

शिक्षक– बच्चों द्वारा दिए जा रहे उत्तरों को शिक्षक दो सूची में (पालतू जानवर और जंगली जानवर) लिखते जाएंगे।

शिक्षक– आपके घर में कौन सा जानवर पाला गया है?

संभावित उत्तर– गाय, कुत्ता।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक– यहाँ सूची में (श्यामपट्ट की तरफ इशारा करते हुए) दो तरह के जानवर हैं– पहला, जो घर में पाले जाते हैं और दूसरा, जो जंगल में रहते हैं। चित्र में हमने कुछ जानवर देखे, आइए चित्र पर आधारित एक कहानी आपको सुनाते हैं।

(शिक्षक हाव–भाव के साथ कहानी का वाचन करेंगे।)

एक जंगल में एक धूर्त लोमड़ी रहती थी। एक बार उसने एक मुर्गे को पेड़ की ऊँची डाल पर बैठे हुए देखा। लोमड़ी ने मन ही मन सोचा कितना बढ़िया भोजन हो सकता है यह मेरे लिए पर, मुश्किल यह थी कि वह पेड़ पर चढ़ नहीं सकती थी, वह चाहती थी कि किसी तरह मुर्गा नीचे उतर आए इसलिए लोमड़ी पेड़ के नीचे गई, उसने मुर्गे से कहा "तुम पेड़ पर क्यों बैठे हो?" मुर्गा बोला, "मैं यहाँ खूँखार जानवरों से डर कर बैठा हूँ।" अरे, क्या आज का समाचार तुमने नहीं सुना!

यहीं पर कहानी का वाचन रोक देंगे और बच्चों से आगे की कहानी पर अनुमान लगाने को कहेंगे।

शिक्षक– मुर्गा पेड़ पर क्यों बैठा था?

बच्चे– अनुमान आधारित उत्तर देते हैं।

शिक्षक– लोमड़ी ने क्या समाचार सुनाया होगा?

बच्चे– अनुमान आधारित उत्तर देते हैं।

शिक्षक– मुर्गा जंगली जानवरों से बचने के लिए और क्या–क्या कर सकता है?

बच्चे– अनुमान आधारित उत्तर देंगे।

(उत्तरों पर चर्चा करने के बाद शिक्षक शेष कहानी का वाचन करेंगे।)

शिक्षक– आइए, आगे कहानी पढ़ते हैं और देखते हैं कि वहाँ क्या हो रहा है।

सभी पशु–पक्षियों में समझौता हो गया है कि अब कोई किसी पर हमला नहीं करेगा। 'मुर्गे ने कहा, "ये तो वास्तव में दुनिया का सबसे अच्छा समाचार हैं।" कहते–कहते उसने अपनी गर्दन उठाकर देखा जैसे दूर से कोई आ रहा हो। "क्या देख रहे हो? लोमड़ी ने पूछा। मुर्गा बोला "कुछ नहीं। पता नहीं क्यों कुछ शिकारी कुत्ते तेजी से इस ओर दौड़े चले आ रहे हैं। "ऐसी बात है? अच्छा क्षमा करना मित्र, मैं चली, "लोमड़ी ने घबराकर वहाँ से भागने के लिए जोर की छलांग लगायी। मुर्गे ने कहा "तुम उनसे घबरा क्यों रही हो? अब तो सभी पशु–पक्षियों में समझौता हो गया है न कि कोई किसी पर हमला नहीं करेगा।" हाँ यह बात तो है। लोमड़ी ने कहा, पर इन कुत्तों के डर से सरपट भाग खड़ी हुई।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से कुछ प्रश्न करेंगे–

- इस कहानी में आपको क्या अच्छा लगा?
- इस कहानी में कौन सा पात्र सबसे अच्छा था और क्यों?
- लोमड़ी ने मुर्गे को झूठा समाचार क्यों सुनाया?
- यदि समाचार को सच मानकर मुर्गा पेड़ से उतर आता तो क्या होता?
- लोमड़ी से बचने के लिए मुर्गा और कौन–कौन सी तरकीब लगा सकता था?

इन प्रश्नों के जो उत्तर बच्चों के द्वारा दिए जा रहे हैं। उसके मुख्य बिन्दु शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखे जाएँगे और पुर्नबलन भी दिया जाएगा। बच्चों द्वारा

आये उत्तरों की चर्चा करने के बाद प्रकरण का समेकन करते हुए कहानी का उद्देश्य बच्चों को समझाया जाएगा।

शिक्षक– इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि किसी अपरिचित व्यक्ति की बातों पर बिना सोच–विचार किए विश्वास नहीं करना चाहिए। हमेशा अपनी सूझ–बूझ का प्रयोग करना चाहिए।

प्रदत्त कार्य– आप लोग घर से किसी कहानी को लिखकर लाइए और कक्षा में सुनाइए।

नोट– एक कहानी पर आधारित एक छोटा रोल प्ले(अभिनय) शिक्षक कक्षा में कराएँ।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–09

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कविता को हाव–भाव एवं लय से प्रस्तुत करते हैं। गलत क्रम में लिखी हुई कविता की पंक्तियों को सही क्रम में लगाते हैं तथा दी गई पंक्तियों के आधार पर नई कविता की रचना करते हैं।

सहायक सामग्री– पेड़ और फलों का चित्र/चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक चित्र चार्ट दिखाते हुए बच्चों से प्रश्न करेंगे–

(आम का चित्र दिखाते हुए)

- **शिक्षक–** यह किसका चित्र है?
- **बच्चे–** आम
- **शिक्षक–** यह फल हमें कहाँ से प्राप्त होता है।
- **बच्चे–** आम के पेड़ से।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक हाव–भाव और उचित लय से कविता का आदर्श पाठ करेंगे। तत्पश्चात स्वयं दुहराते हुए बच्चों से एक–एक पंक्ति का सस्वर पाठ करवाएँगे।

पेड़ लगाए पेड़ लगाए,
दादी कहती बारंबार।
पेड़ लगाएं सौ–सौ बार,
पेड़ हमें देते हैं जीवन।

सॉंस–सॉंस भर ऑक्सीजन,
प्रदूषण दूर भगाते हैं।
बाढ़ से हमें बचाते हैं,
पेड़ हमें देते हैं फल।
पेड़ों के कारण है कल,
पेड़ खूब लगाएं हम।
पेड़ खूब लगाएं हम।।

शिक्षक कक्षा को दो समूहों में बाँट देंगे। दोनों समूह एक दूसरे के संकेतों के आधार पर कविता को पढकर सुनाएँगे, जैसे– जिन पंक्तियों में पेड़ शब्द आया है, उनको पढ़िए। कविता की चौथी पंक्ति पढ़कर सुनाएँगे। प्रत्येक समूह द्वारा दूसरे समूह से पंक्ति पर आधारित प्रश्न भी पूछे जाएँगे। शिक्षक द्वारा कठिन शब्दों का अर्थ एवं कविता के आशय पर बच्चों से बातचीत की जाएगी।

शिक्षक– पेड़ से हमें और क्या–क्या प्राप्त होता है?

बच्चे– लकड़ी, फल और ऑक्सीजन।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक एक या दो बच्चों से कविता का लयात्मक गायन करवाएँगे तथा पेड़ लगाने से संबंधित कुछ प्रश्न करेंगे।

1. पेड़ लगाने से क्या लाभ है?
2. आपके घर में लकड़ी से बनी कौन–कौन सी वस्तुएँ मौजूद हैं?
3. शिक्षक कार्यपत्रक संख्या एक के माध्यम से कविता को क्रमबद्ध करके लिखने हेतु निर्देशित करेंगे।
4. शिक्षक द्वारा बच्चों से कविता को कहानी के रूप में लिखने को कहा जाएगा।

प्रदत्त कार्य– बच्चे कार्यपत्रक संख्या तीन घर से पूर्ण करके लाएँगे।

सप्ताह– 2

दिवस–10

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कहानी के आधार पर सही चित्र का मिलान करके नई कहानी लिख लेते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, चित्र–कार्ड, आई०सी०टी०, विषयोपयोगी सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

- कक्षा–कक्ष में शिक्षक बच्चों से सामान्य बातचीत करेंगे।
- शिक्षक बच्चों से उनके दोस्तों के बारे में पूछेंगे।
- "आप दोस्त/मित्र क्यों पसन्द करते हैं? (शिक्षक इस पर बच्चों से चर्चा–परिचर्चा करेंगे।)
- शिक्षक बच्चों को एक प्रचलित कहानी (कछुआ और खरगोश) सुनाएँगे और उससे जुड़े हुए कुछ प्रश्न बच्चों से करेंगे, जैसे–

1– दौड़ की प्रतियोगिता किसके–किसके बीच शुरु हुई?

2– कछुआ और खरगोश में कौन तेज दौड़ता है?

3– दौड़ की प्रतियोगिता में कौन विजयी हुआ?

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को एक छोटी सी कहानी सुनाएँगे–

एक कौआ था। एक दिन उसे एक रोटी मिली। वह रोटी अपनी चोंच में पकड़ कर पेड़ पर बैठा था। तभी एक चालाक लोमड़ी उधर से जा रही थी। उसने सोचा, कौए से रोटी को कैसे प्राप्त किया जाए! तब लोमड़ी ने कौए से कहा कि कौए भाई

आप गाना बहुत ही अच्छा गाते हैं। कृपया आप मुझे अपना गाना सुनाइए। कौए ने अपनी प्रशंसा सुनकर गाने के लिए जैसे ही अपनी चोंच को खोला, रोटी का टुकड़ा नीचे गिर गया और उस टुकड़े को लेकर लोमड़ी भाग गई।

शिक्षक बच्चों से इस कहानी से जुड़े हुए कुछ प्रश्न करेंगे–

1– रोटी का टुकड़ा किसके पास था?

2– कौए के गाने की प्रशंसा किसने की?

3– रोटी का टुकड़ा प्राप्त करने के लिए लोमड़ी ने क्या उपाय सोचा ?

प्रश्नोत्तर के बाद शिक्षक बच्चों को कहानी से जुड़े हुए कुछ चित्र देंगे और बच्चों से उन चित्रों को कहानी से मिलान करने को कहेंगे।

शिक्षक बच्चों को में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करने के लिए कहेंगे। शिक्षक पत्रक को पूर्ण करने में बच्चों का अपेक्षित सहयोग करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–11

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों का साक्षात्कार कर लेते हैं।

सहायक सामग्री– परिवार, मित्रों से संबंधित चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से संवाद स्थापित करते हुए अपनी बात को आगे बढाएँगे–

संवाद के बिन्दु–

- आप सब कैसे हैं?
- आपके घर पर सब लोग कैसे हैं?
- विद्यालय आते समय आपने रास्ते में क्या–क्या देखा?

इस प्रकार के अन्य प्रश्नों का निर्माण शिक्षक स्वयं भी कर सकते हैं।

शिक्षण के मध्य

कार्यपत्रक संख्या एक के आधार पर शिक्षक बच्चों से दादाजी के साक्षात्कार विषय पर चर्चा करेंगे। इसमें साक्षात्कार की प्रक्रिया पर चर्चा करते हुए सुषमा द्वारा अपने दादाजी से पूछे गये प्रश्नों पर बातचीत की जाएगी।

- पत्रक में सुषमा के द्वारा अपने दादाजी से साक्षात्कार के दौरान कौन–कौन से प्रश्न पूछे गए?
- सुषमा की जगह यदि आप होते तो क्या–क्या प्रश्न करते?

गतिविधि–

सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा बच्चों को दो–दो के जोड़े में बिठाकर उन्हें कार्यपत्रक संख्या दो दी जाएगी। बैठक व्यवस्था में बच्चे अपने मित्र के साथ बैठ सकते हैं। दिए गए पत्रक के अनुसार बच्चे एक दूसरे से प्रश्न पूछकर प्राप्त जानकारी को अपने पत्रक में भरेंगे। पत्रक में दो प्रश्न बच्चे अपने विवेक से पूछने को स्वतंत्र होंगे। प्रक्रिया पूर्ण होने के पश्चात् सभी बच्चे साक्षात्कार के आधार पर अपने जोड़े के दूसरे साथी के विषय में बताएँगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक– बच्चो! इस प्रकार आज हमनें साक्षात्कार करने की प्रक्रिया को समझा। साक्षात्कार के माध्यम से आप संबंधित व्यक्ति के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आज गृहकार्य में भी साक्षात्कार पर आधारित कार्य करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3 | दिवस–12

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे एकवचन व बहुवचन में अंतर कर लेते हैं।

सहायक सामग्री– शब्द–कार्ड, चित्र–कार्ड (एकवचन एवं बहुवचन वाले)।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कक्षा के वातावरण को सहज बनाने के लिए बच्चों से उनके परिवार के बारे में सामान्य जानकारी लेंगे-

- आपके घर में कौन-कौन हैं ?
- कौन क्या–क्या करता है?
- अच्छा, यह बताइए कि आप घर पर अपने माता–पिता का सहयोग कैसे करते हैं?

बच्चों की पसंद/नापसंद आदि बातों को भी सम्मिलित करते हुए शिक्षण कार्य को आगे बढ़ाएँगे।

शिक्षक श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखेंगे–

लड़का पढ़ता है।	लड़के पढ़तें हैं।
लड़की पढ़ती है।	लड़कियाँ पढ़ती हैं।
लता उगती है।	लताएँ उगती हैं।
घोड़ा दौड़ रहा है।	घोड़े दौड़ रहे हैं।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को कहेंगे कि चलो आज हम एक खेल खेलते हैं–

गतिविधि–

- शिक्षक बच्चों को गोल घेरे में बैठा देंगे।
- उनके बीच में पहले से तैयार किए हुए शब्द कार्ड (जिसमें चित्र भी बने हों) रख देंगे।
- अब एक–एक बच्चे का नाम लेकर बुलाएँगे तथा कार्ड उठाने के लिए कहेंगे ।
- बच्चों द्वारा उठाए गए कार्ड पर बने चित्र पर वार्तालाप करेंगे तथा इस गतिविधि में सभी बच्चों को मौका देंगे।

इस प्रकार शिक्षक सभी कार्डों को दिखाते हुए स्पष्ट करेंगे कि–

जहाँ एक व्यक्ति, वस्तु, जानवर आदि की बात की जाती है वहाँ एकवचन होता है तथा जहाँ एक से अधिक व्यक्ति, वस्तु, जानवर आदि की बात की जाती है वहाँ बहुवचन होता है।

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक व दो में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूरा करने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कार्यपत्रकों की जाँच करेंगे तथा जाँच के बाद जिन बच्चों को समझने में कठिनाई आ रही होगी, उनका समाधान करेंगे। शिक्षक बच्चों के एकवचन एवं बहुवचन में अंतर करने की समझ को स्पष्ट करेंगे।

शब्द के जिस रूप से एक वस्तु का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं।
शब्द के जिस रूप एक से अधिक वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 3

दिवस–13

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का प्रयोग करते हैं।

शिक्षण सामग्री– शब्द चार्ट, फ्लैश कार्ड।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

एक चित्रात्मक चार्ट दिखाते हुए शिक्षक बच्चों से बातचीत करेंगे–

'क'	'ख'
बालक पढ़ता है।	बालिका पढ़ती है।
लड़का खेलता है।	लड़की खेलती है।
दादाजी समाचार पत्र पढ़ते हैं।	दादी जी भोजन बनाती हैं।
शेर दहाड़ रहा है।	शेरनी शिकार कर रही है।
अध्यापक बच्चों को पढ़ा रहे हैं।	अध्यापिका श्यामपट्ट पर लिख रही हैं।

शिक्षक बच्चों से बातचीत के क्रम में बताएँगे कि 'क' वर्ग में लिखे शब्द बालक, लड़का, दादा जी, शेर, अध्यापक शब्द, पुरुष जाति का बोध करा रहे हैं तथा 'ख' वर्ग में लिखे शब्द बालिका, दादी जी, शेरनी, लड़की, अध्यापिका शब्द स्त्री जाति का बोध करा रहे हैं।

गतिविधि 1–

शिक्षक द्वारा बच्चों के साथ एक गतिविधि कराई जाएगी। बच्चों को गोल घेरे में बैठा देंगे। शिक्षक पहले से ही दो रंग के फ्लैश–काड्र्स बना लेंगे। एक रंग के

फ्लैश–कार्ड में स्त्रीलिंग शब्द और दूसरे रंग के फ्लैश–कार्ड में पुल्लिग शब्द लिखे होंगे। अब शिक्षक बच्चों के दोनों समूहों में फ्लैश–काड्र्स को इस प्रकार से बाँटेंगे कि हर समूह के पास दोनों रंग के फ्लैश कार्ड हों। बच्चे एक समूह से दूसरे समूह में अपने कार्ड के स्त्रीलिंग या पुल्लिग शब्द वाले साथी को ढूँढेंगे और उनके पास जाकर बैठेंगे।

गतिविधि 2–

शिक्षक स्त्रीलिंग तथा पुल्लिग के आधार पर बच्चों से वाक्य निर्माण कराएँगे। शिक्षक पूर्व में ही शब्द कार्ड बनाएँगे तथा छः–छः बच्चों के समूह बना देंगे। अब बारी–बारी से एक–एक समूह को बुलाकर वाक्य बनाने को कहेंगे। शिक्षक इस तरह शब्द कार्ड बनाएँगे कि वाक्य का निर्माण स्त्रीलिंग एवं पुल्लिग में हो। शब्द कार्ड इस प्रकार हो–

रीता	सोहन	बनाती	प्रतिदिन	है
मोहन	खाना	साथ में	विद्यालय	जाती
गीता	है	स्कूल	जाते	हैं

शिक्षक बच्चों को दिए गए अभ्यास कार्य को करवाएँगे–

मिलान करो–

'क'	'ख'
चूहा	शेरनी
बिल्ला	बकरी
चाचा	चूहिया
काका	बिल्ली

शेर	चाची
बकरा	काकी

शिक्षण के अंत में

कार्यपत्रक की जाँच करने के बाद जिन बच्चों को पुल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने में कठिनाई हो उसे शिक्षक पुनः समझाएँगे।

शब्द के जिस रूप से पुरुष और स्त्री जाति का बोध होता है उसे लिंग कहते हैं।

शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध होता है उसे पुल्लिंग कहते हैं, जैसे– बैल, बंदर, पिता।

शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध होता है उसे स्त्रीलिंग कहते हैं जैसे– गाय, माता, चाची, बंदरिया।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–14

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कविता को हाव–भाव और लय के साथ प्रस्तुत करते हैं तथा कविता पर चर्चा करने के बाद दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हैं।

सहायक सामग्री– कविता चार्ट, कार्यपत्रक, विषय से संबंधित चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक द्वारा प्रस्तावित प्रश्न	संभावित उत्तर
1. पक्षी कहाँ उड़ते है?	आसमान में।
2. रात को आसमान में क्या–क्या दिखाई देता है?	चाँद–तारे।
3. आप चाँद के विषय में क्या–क्या जानते है?	बच्चे अलग–अलग उत्तर देंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को निम्नलिखित कविता सुनाएँगे–

"हठ कर बैठा–चाँद एक दिन, माता से यह बोला
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।
सन–सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर–ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।
आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का,
अगर न हो तो ला दो, कुर्ता ही कोई भाड़े का।

बच्चे की सुन बात कहा माता ने ''अरे सलोने !
कुशल करें भगवान, लगे ना तुझको जादू–टोने।
जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।
कभी एक अंगुल भर चौड़ा कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा।
घटता बढ़ता रोज किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की ऑंखों को तू दिखलाई पड़ता है।
अब तू ही तो बता, नाप तेरी किस रोज लिवाएं।
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज बदन में आए।

शिक्षक बच्चों से उपर्युक्त कविता पर बातचीत करते हुए बच्चों को यह बताएँगे कि जाड़े से प्रभावित होकर चाँद ने अपनी माँ से क्या कहा?

गतिविधि 1–

शिक्षक बच्चों के समक्ष हाव–भाव और लय के साथ कविता का आदर्श पाठ करेंगे। यह पाठ बच्चों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एक से अधिक बार भी किया जा सकता है।

शिक्षक कविता को स्वयं दुहराते हुए बच्चों से एक–एक पंक्ति का सामूहिक पाठ करवाएँगे। अलग–अलग बच्चों से सस्वर पाठ करवाएँगे। पूरी कविता का सस्वर पाठ करने के बाद बच्चों से कविता में प्रयुक्त तुकान्त शब्दों को चुनने के लिए कहेंगे, जैसे– बोला, झिंगोला।

शिक्षक बच्चों से प्रश्न करेंगे–

- चाँद ने माँ से क्या हठ किया?
- चाँद में किस प्रकार के बदलाव आते हैं?

- पूर्णिमा का चाँद कैसा होता है?

गतिविधि 2–

पूरी कक्षा को दो समूहों में बाँट देंगे। दोनों समूह एक दूसरे के संकेतों के आधार पर कविता को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्न करेंगे, जैसे– समूह एक वाले समूह दो से कविता की दूसरी पंक्ति को पढ़ने को कहेंगे और उस पर आधारित प्रश्न करेंगे।

उदाहरण– 'सिलवा दो माँ मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला'– इस पर समूह एक का प्रश्न हो सकता है– झिंगोला का अर्थ क्या है? इसी तरह से यह गतिविधि कविता की सम्पूर्ण पंक्तियों के पूरी होने तक जारी रहेगी।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक द्वारा पूरी कविता का सारांश बच्चों तक पहुँचाने के लिए निम्नवत् मूल्यांकन किया जाएगा–

1. बच्चों को दो छोटे समूहों में बैठाकर दो–दो पंक्तियों का भाव लिखने के लिए कहेंगे।
2. कक्षा के एक या दो बच्चों से लयात्मक गायन करवाएँगे।
3. श्यामपट्ट पर कविता के कुछ शब्द– बोला–झिंगोला, भरता–करता, जाड़े का–भाड़े का इत्यादि लिख दें, फिर बच्चों से उन शब्दों को जोड़कर तुकान्त पंक्तियाँ लिखने को कहेंगे, जैसे– मुझको डर नहीं है जाड़े का, मेरे पास है स्वेटर भाड़े का।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–15

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कहानी/कविता/गद्य/पद्य को उपयुक्त उतार–चढ़ाव, गति–प्रवाह के साथ पढ़ते और सुनाते हैं।

सहायक सामग्री– पाठ्यपुस्तक की कविता, कहानी का चार्ट, कार्यपत्रक या कविता/कहानी का आडियो–वीडियो।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से याद की गई कोई भी एक कविता सुनाने को कहेंगे। बच्चे कविता को सुनाएँगे (कम से कम दो बच्चों से कविता को सुनेंगे)। शिक्षक बच्चों से कहानी सुनाने के लिए भी कहेंगे (संभावित कहानी– प्यासा कौआ, मेहनती कछुआ, अकबर–बीरबल, तेनालीराम आदि हो सकती हैं)।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को निम्नलिखित कविता सुनाएँगे।(नोट– इसी प्रकार की अन्य कविता भी सुना सकते हैं।)

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।
समझ रहे हो क्या कहती है,

उठ–उठ गिर–गिर तरल–तरंग।
भर लो–भर लो अपने मन में,
मीठी–मीठी मृदुल उमंग।
पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।

शिक्षक कविता को लयबद्ध करके सुनाएँगे तथा बच्चों से सस्वर गायन करवाएँगे।

नोट– शिक्षक इस बात का पूरा ध्यान रखें कि बच्चे उतार–चढ़ाव के साथ कविता का गायन कर रहे हों।

अब शिक्षक सस्वर गायन के बाद एक–एक बच्चे से कविता सुनेंगे। कविता सुनने के बाद आरोह/अवरोह में होने वाली कमियों पर ध्यान देकर निराकरण करेंगे।

अब शिक्षक बच्चों को एक कहानी सुनाएँगे जो इस प्रकार हो सकती है–

एक कक्षा में शिखर, सागर, अवनि और आकाश नाम के विद्यार्थी पढ़ते थे। शिखर और सागर की गहरी मित्रता थी, जबकि अवनि और आकाश कक्षा में हमेशा अव्वल रहते थे। एक बार की बात है, जनपदीय कविता/कहानी प्रतियोगिता में अवनि और आकाश ने अपने विद्यालय की तरफ से प्रतिभाग किया। इस तैयारी में शिखर और सागर ने भी अवनि और आकाश की मदद की, जिसके फलस्वरूप जनपद में इनके विद्यालय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

ये चारों बच्चे अपने नाम की सार्थकता को सिद्ध करते रहे। शिखर के विचार शिखर की तरह उन्नत जबकि सागर अपनी सूझ–बूझ एवं विचारों की विशालता के लिए जाना जाता था। अवनि काफी गम्भीर एवं सहनशील थी जबकि आकाश बहुत निर्मल एवं स्वच्छ विचारों वाला था। चारों अपने विद्यालय के कोहिनूर थे और अपने शिक्षकों के बहुत प्रिय थे।

कहानी सुनाने के उपरांत शिक्षक उपर्युक्त कहानी को बच्चों से सुनेंगे।

नोट– बच्चों द्वारा प्रस्तुत कहानी के उतार–चढ़ाव, कहानी की क्रमबद्धता एवं कहानी से मिलने वाली सीख पर शिक्षक विशेष रूप से ध्यान देंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करने के लिए कहेंगे। शिक्षक पत्रक को पूर्ण करने में बच्चों का अपेक्षित सहयोग करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–16

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर लेते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, विषय से संबंधित चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक श्यामपट्ट पर दो अनुच्छेद लिखकर बच्चों से चर्चा–परिचर्चा करेंगे–

1	2
रीना ने कहा–रीना कल पाठशाला नहीं जाएगी, क्योंकि रीना को दिल्ली जाना है। रीना की नानी जी बीमार हैं।	रीना ने कहा कि वह कल पाठशाला नहीं जाएगी, क्योंकि उसको दिल्ली जाना है। वह अपनी नानी को देखने दिल्ली जा रही है। उसकी नानी जी बीमार हैं।

शिक्षक बच्चों से चर्चा करते हुए प्रश्न करेंगे और सभी बच्चों को गतिविधि में शामिल करने का प्रयास करेंगे–

1– श्यामपट्ट पर लिखे दोनों अनुच्छेदों में क्या अंतर है ?

2– दोनों अनुच्छेदों को पढ़ने में कौन सा अनुच्छेद सही लग रहा है?

3– 'रीना' शब्द की जगह जो शब्द प्रयोग हुए हैं उनको क्या कहते हैं ?

चर्चा–परिचर्चा के बाद शिक्षक यह बताएँगे कि रीना अर्थात् संज्ञा शब्दों की जगह पर जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, उन्हीं को सर्वनाम कहते हैं ।

शिक्षण के मध्य

गतिविधि 1– शिक्षक सभी बच्चों को कार्यपत्रक संख्या 1 में सही सर्वनाम शब्दों को छाँटने के लिए कहेंगे।

गतिविधि 2– शिक्षक सर्वनाम की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बच्चों से चर्चा–परिचर्चा करेंगे और पुनः यह निर्देश देते हुए कार्यपत्रक संख्या तीन सभी बच्चों को देंगें और रेखांकित संज्ञा शब्दों की जगह सर्वनाम शब्द लिख कर वाक्य को दुबारा लिखने को कहेंगे। शिक्षक स्वयं कक्षा में घूम–घूम कर बच्चों का मार्गदर्शन करेंगे ।

शिक्षण के अंत में

अंत में शिक्षक सर्वनाम की अवधारणा स्पष्ट करते हुए परिभाषा बताएँगे "जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं, जैसे– मैं, तुम, हम, वह, इसका, उसका, आदि।"

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या दो में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–17

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विशेषण शब्दों को पहचान लेते हैं और अपने वाक्यों में प्रयोग कर लेते हैं।

सहायक सामग्री– कार्य–पत्रक, फ्लैश कार्ड, विषय से संबंधित चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक संवाद विधि के माध्यम से दिए गए अनुच्छेद पर चर्चा करेंगे और कुछ प्रश्न पूछ कर बच्चों का ध्यान विषय पर केंद्रित करने का प्रयास करेंगे।

सन्तराम अनुभवी माली हैं। उनका एक सुंदर बाग है। उनके बाग में रंग–बिरंगे फूल खिले हैं। उनके बाग में एक बड़ा सा आम का पेड़ है। उस पर मीठे–मीठे आम आते हैं। कभी–कभी नटखट बंदर उन्हें खा लेते हैं। उनके बाग में कोयल सुरीली आवाज में गाना गाती है।

1– बाग में फूल कैसे दिखते हैं?

2– कोयल की आवाज कैसी है?

3– बाग कैसा है?

4– बंदर कैसे हैं?

बच्चे इन प्रश्नों का उत्तर अपनी समझ के अनुसार देंगे।

शिक्षण के मध्य

बच्चों द्वारा दिए गए उत्तर के आधार पर शिक्षक यह बताने का प्रयास करेंगे कि अनुभवी, सुंदर, रंग–बिरंगे, बड़ा सा, मीठे, नटखट, सुरीली शब्द संज्ञा शब्दों की विशेषता बता रहे हैं।

गतिविधि 1–

शिक्षक कार्यपत्रक संख्या दो में दिए गए संज्ञा शब्दों की विशेषता लिखने को कहेंगे और अंत में विशेषण की अवधारणा स्पष्ट करते हुए बताएँगे कि विशेषता बताने वाले इन्हीं शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।

गतिविधि 2–

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक में दिए गए वाक्यों को उचित विशेषण लगाकर पूरा करने के लिए कहेंगे।

गतिविधि 3–

शिक्षक कक्षा को क्रमशः तीन समूहों में बाँटकर समूह को संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण का नाम देंगे। दिए गए फ्लैश कार्ड में से अपने समूह के नाम के अनुसार फ्लैश कार्ड को छाँटने के लिए कहेंगे। गतिविधि के दौरान शिक्षक सभी बच्चों का अवलोकन करेंगे और सभी की सहभागिता को सुनिश्चित करेंगे।

शिक्षण के अंत में

अंत में शिक्षक 'विशेषण' की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए परिभाषा बताएँगे-"संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।"

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन देंगे और यह जानने का प्रयास करेंगे कि बच्चा सीखने की प्रक्रिया में कहाँ तक पहुँचा है?

प्रदत्त कार्य– शिक्षक सभी बच्चों को कार्यपत्रक संख्या चार को घर से भरकर लाने के लिए कहेंगे ।

सप्ताह– 4

दिवस–18

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे चित्र देखकर/दिए गए शब्दों के आधार पर अपनी भाषा में कहानी लिख लेते हैं।

सहायक सामग्री– विषय से संबंधित विभिन्न प्रकार के चित्र जैसे– पशु–पक्षी, घर, सामान, परिवार के सदस्य, कार्यपत्रक इत्यादि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से उनके आस–पास पाये जाने वाले जीवों एवं घटित होने वाली घटनाओं पर चर्चा करेंगे।

शिक्षक– आज विद्यालय आते समय आपने क्या–क्या देखा?

बच्चों के संभावित उत्तर– बिल्ली, गाय, रिक्शा, साइकिल इत्यादि।

शिक्षक बच्चों से इन शब्दों पर बारी–बारी से दो–चार वाक्य बोलने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को बोलने का पर्याप्त अवसर प्रदान करेंगे तथा उन्हें प्रोत्साहित करेंगे।

गतिविधि 1–

शिक्षक बच्चों को दो–दो के समूह में बैठाएँगे तथा बच्चों द्वारा देखी गई एवं आस–पास पाई जाने वाली वस्तुओं की सूची बनवाएँगे।

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करने के लिए कहेंगे। शिक्षक दो बच्चों से सूची का प्रस्तुतीकरण करवाएँगे।

शिक्षक बच्चों को बंदर एवं मगरमच्छ की कहानी सुनाएँगे तथा कार्यपत्रक संख्या दो में बच्चों से तोता एवं बंदर के बीच होने वाली अनुमानित बातचीत लिखने को कहेंगे।

बच्चों द्वारा लिखी गयी इस बातचीत का प्रस्तुतीकरण चार–चार के समूह में करावाएँगे।

बच्चों द्वारा लिखे गये वाक्यों को कहानी का रूप देते हुए बच्चों को सुनाएँगे।

गतिविधि 2–

शिक्षक छात्रों को दो–दो के समूह में बैठाएँगे। कुछ वस्तुओं अथवा जीवों का नाम लिखने को कहेंगे जिनकी बातचीत हो सकती है, जैसे–आलू–मटर की बातचीत, पेन–पेंसिल की बातचीत।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कार्यपत्रक में मेंढक और चिड़िया के चित्र को पूरा कराकर बातचीत के आधार पर कहानी का निर्माण करवाएँगे और बच्चों से कहानी का प्रस्तुतीकरण करवाएँगे साथ ही सभी बच्चों का उत्साहवर्धन करेंगे।

प्रदत्त कार्य– सभी बच्चे कार्यपत्रक संख्या तीन में घर से एक–एक कहानी लिखकर लाएँगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–19

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे देवनागरी लिपि पढ़कर लिखते हैं।

सहायक सामग्री– वर्ण चार्ट, वर्ण कार्ड, मात्रा कार्ड, शब्द/वाक्य पट्टियाँ, चार्ट पेपर, रंगीन पेंसिल।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक के लिए– (हिन्दी भाषा का लेखन जिस लिपि में किया जाता है उसे देवनागरी लिपि कहते हैं।)

चार्ट पर लिखे गए गद्यांश को शिक्षक बच्चों के साथ पढ़ेंगे। गद्यांश में आए विभिन्न वर्णों/मात्राओं/शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखते रहेंगे।

योगेश के पिता सेना में कार्य करते हैं। वे सैनिकों के लिए भोजन बनाते हैं। बातचीत के दौरान उन्होंने यह बताया कि सैनिकों का स्वस्थ रहना बहुत जरूरी है। अच्छे खान–पान से उनकी सेहत अच्छी रहती है।

बच्चे उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर वर्णों और मात्राओं के लिखने के तरीकों को समझने का प्रयास करेंगे।

शिक्षक के लिए– शिक्षक द्वारा कुछ बच्चों को श्यामपट्ट पर स्वेच्छा से कुछ भी लिखने के लिए कहा जाएगा।

- पहली स्थिति– बच्चा आड़ी टेढ़ी रेखाएं खींचेगा।
- दूसरी स्थिति– चित्र बनाने की कोशिश करेगा।

शिक्षक चार्ट के माध्यम से बच्चों को वर्ण, उसकी आकृति और लिखने के प्रवाह पर अभ्यास कराएँगे।

शिक्षण के मध्य

गतिविधि

कक्षा में बच्चों को तीन समूहों में बाँटेंगे। प्रत्येक समूह में देवनागरी लिपि के अलग–अलग वर्गों के वर्णों से अभ्यास पुस्तिका पर शब्द निर्माण करेंगे–

म स र प ल	ग द त न च	ज ब य व भ
समूह 'क'	समूह 'ख'	समूह 'ग'

संभावित शब्द यथा– मगर, सर्कस, सड़क, पहल, गमला, चम्मच, जहाज, बकरी, यमुना। पुनः उपर्युक्त शब्दों से वाक्य–निर्माण कराया जाए तथा साथ ही साथ वर्णों, शब्दों वाक्यों की बनावट पर बिंदुवार गतिविधियाँ कराई जाएँगी।

गतिविधि

स्तंभ (क) का सही मिलान स्तंभ (ख) से करें–

अक्षर पहचान

स्तंभ (क)	स्तंभ (ख)
न	रे
द	प
स	की
प	न
की	स
रे	द

शिक्षण के अंत में

गतिविधि (क)

शिक्षक किसी पत्र–पत्रिका से लिए हुए एक अनुच्छेद बच्चों को अपनी अभ्यास–पुस्तिका में लिखने को कहेंगे। तत्पश्चात् अपनी अभ्यास पुस्तिका अपने सहपाठी से अदल–बदल कर उसकी लिखित सामग्री पढ़ने को कहेंगे।

शिक्षक के लिए– लेखन के दौरान मात्रागत त्रुटियां हो सकती हैं, उन्हें अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट पर उदाहरणों के माध्यम से सुधार कराया जाए।

गतिविधि (ख)

देवनागरी लिपि के कुछ वर्ण/अक्षर अलग–अलग तरीकों से लिखे जा रहे हैं। उदाहरण के साथ इस पर चर्चा की जाएगी तथा बच्चे वर्ण/अक्षरों को शुद्धता के साथ पढ़ेंगे।

दिए गए शब्दों को पढ़कर लिखें–

विद्यालय, यद्यपि, गंतव्य, कण्ठ, चन्दन

....

इस सत्र में शिक्षक पुनरावृत्ति के कुछ प्रश्न करेंगे और उच्चारण में आ रही त्रुटियों या मात्रागत त्रुटियों का पुनः अभ्यास कराएँगे।

प्रदत्त कार्य– बच्चे देवनागरी–लिपि के वर्णों, शब्दों पर आधारित गद्यांश/पद्यांश लिखकर लाएँगे और कक्षा–कक्ष में पढ़कर सुनाएँगे, शिक्षक उच्चारण–पर ध्यान देंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–20

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे समाचार–पत्र पढ़कर उस पर अपने विचार व्यक्त कर लेते हैं।

सहायक सामग्री– समाचार–पत्र जिसमें विद्यालय, शैक्षिक परिवेश और बच्चों से संबंधित खबरें हों।

शिक्षण–प्रकिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कुछ अखबारों/समाचार–पत्रों को बच्चों को उलटने–पलटने के लिए देंगे। बच्चे उनके पन्नों को सही क्रम मे सजाने की कोशिश करेंगे। समाचार–पत्र में छपे चित्रों, समाचारों और विज्ञापनों को भी देखेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों के छोटे–छोटे समूह (तीन या चार बच्चों का) बनाएँगे। बच्चे समाचार–पत्र से रुचि के अनुसार समाचारों को चुनेंगे तथा आपस में चर्चा करेंगे।

प्रत्येक समूह से शिक्षक कुछ प्रश्न करेंगे।

समाचार–पत्र में से आपने किन खबरों को देखा –

समूह क– खेल से संबंधित

समूह ख– विद्यालय/शिक्षा से संबंधित

समूह ग– विज्ञापन/चित्र से संबंधित

चर्चा के बिन्दु–

1. राष्ट्रीय–समाचार
2. खेल–समाचार
3. क्षेत्रीय–समाचार

4. विज्ञापन

लेखन– बच्चे अपनी रुचि एवं पसंद के अनुसार समाचार लिखेंगे तथा प्रस्तुत करेंगे।

गतिविधि–

बच्चे समाचार–पत्र से तरह–तरह के चित्र का चयन करेंगे और चित्रों के आधार पर समाचार बनाएँगे।

शिक्षण के अंत में

बच्चे 'स्कूल चलो अभियान', 'सबके लिए शिक्षा', 'हमारा विद्यालय' आदि विषयों पर चर्चा के उपरांत विज्ञापन और समाचार बनाएँगे तथा अलग–अलग चार्ट पर चस्पा करेंगे।

शिक्षण के बाद अलग–अलग बच्चों की रुचि से संबंधित चार्ट पर चस्पा किया जाएगा–

राष्ट्रीय समाचार | खेलकूद समाचार | क्षेत्रीय समाचार | विज्ञापन

प्रदत्त कार्य– बच्चों को घर पर निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा करने एवं समाचार लिखने के लिए निर्देशित किया जाएगा–

1. विद्यालय नियमित आने वाले बच्चों के संबंध में।
2. माता–पिता, अभिभावकों से संबंधित समाचार।
3. स्वतंत्रता–दिवस, गणतंत्र दिवस, एकता दिवस आदि से संबंधित समाचार।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 5

दिवस–21

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे स्वर, व्यंजन और संयुक्ताक्षर को समझते हैं और बोलचाल में उनका प्रयोग कर लेते हैं।

सहायक सामग्री– स्वरों के फ्लैश कार्ड, व्यंजनों के कार्ड और संयुक्ताक्षर युक्त फ्लैश कार्ड एवं साथ ही वर्णमाला चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों के छोटे–छोटे समूह (तीन से पाँच बच्चों के) बनवाएँगे। बच्चे शिक्षक के निर्देशानुसार अपने–अपने समूह में बैठ जाएँगे। सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों को एक चार्ट (जिसमें स्वर, व्यंजन और संयुक्ताक्षर हो।) दिखाएँगे, जैसे–

स्वर

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ए
ऐ	ओ	औ	अं
अः			

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	
क्ष	त्र	ज्ञ		
ड़	ढ़	श्र		

• शिक्षक वर्णमाला चार्ट के आधार पर प्रत्येक वर्ण का शुद्धता के साथ उच्चारण करेंगे तत्पश्चात् बच्चों से भी करवाएँगे ।

गतिविधि 1–

• शिक्षक स्वर युक्त फ्लैश कार्ड को बच्चों में वितरित करेंगे। तत्पश्चात् बच्चे शुद्ध उच्चारण करेंगे।

गतिविधि 2–

• शिक्षक व्यंजन युक्त फ्लैश कार्ड को बच्चों में वितरित करेंगे। तत्पश्चात् बच्चे शुद्ध उच्चारण करेंगे ।

गतिविधि 3–

• शिक्षक संयुक्ताक्षर फ्लैश कार्ड को बच्चों में वितरित करेंगे। तत्पश्चात् बच्चे शुद्ध उच्चारण करेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक वर्णों को जोड़कर अमात्रिक शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया बताएँगे, जैसे–

न + ल = नल, क + म + ल = कमल, प + न + घ + ट = पनघट,

ज + ल = जल, न + य + न = नयन, स + र + प + त = सरपत,

क + ल = कल, प + व + न = पवन, क + ट + ह + ल = कटहल

•शिक्षक मात्रिक शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया बच्चों को बताएँगे–

स्वर	मात्रा चिह्न	शब्द
अ	वर्ण में समाहित	गगन
आ	ा	काजल
इ	ि	किताब

ई	ी	शरीर
उ	ु	मुलाकात
ऊ	ू	सूरज
ऋ	ृ	कृषि
ए	े	मेमना
ऐ	ै	कैलाश
ओ	ो	मोहन
औ	ौ	गौरव
अं	ं	शंकर
अः	ः	दुःख

•शिक्षक संयुक्ताक्षर व संयुक्त व्यंजन की निर्माण–प्रक्रिया को निम्नलिखित चार्ट के माध्यम से बताएँगे।

•संयुक्त व्यंजन की निर्माण–प्रक्रिया को बच्चों को समझाएँगे।

• क् + ष = क्ष
• त् + र = त्र
• ज् + ञ = ज्ञ
• श् + र = श्र

•शिक्षक संयुक्त व्यंजन से बनने वाले शब्दों की तालिका बच्चों से पूरा करवाएँगे और उनको सहयोग प्रदान करेंगे।

शिक्षण के अंत में

संयुक्ताक्षर– शिक्षक छात्रों को संयुक्ताक्षर सिखाने के लिए नीचे दी गई तालिका में वर्णों को जोड़कर शब्द बनवाएँगे और उन्हें पढ़कर लिखने के लिए कहेंगे।

छ + न्द		ल + ट्टू	
न + न्द		ग + ट्टू	
च + न्द		न + ट्टू	
क+ न्द		क + ट्टू	
म+ न्द		र + ट्टू	

प्रदत्त कार्यः– शिक्षक बच्चों को कुछ अमात्रिक, मात्रिक शब्दों को बनाकर लाने का गृहकार्य देंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तनी कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 5

दिवस–22

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे बोलचाल में अनुस्वार, अनुनासिक शब्दों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हैं एवं समझते हैं।

सहायक सामग्री– अनुस्वार, अनुनासिक शब्दों से संबंधित फ्लैश कार्ड, चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक अनुस्वार एवं अनुनासिक से संबंधित विविध शब्द, जैसे– अंक, अंश, संसार, पतंग, रंग, हँसना, काँच, यहाँ, माँ, पाँच, गाँव आदि शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर प्रत्येक बच्चे को बुलाकर प्रत्येक शब्द का स्पष्ट उच्चारण करेंगे एवं करवाएँगे।

शिक्षण के मध्य

गतिविधि 1–

शिक्षक अनुस्वार और अनुनासिक को अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ फ्लैश कार्डों का प्रयोग करेंगे जिसमें अनुस्वार और अनुनासिक से संबंधित फ्लैश कार्ड को बच्चों के साथ साझा कर अनुस्वार एवं अनुनासिक शब्दों को छाँटने को कहेंगे।

गतिविधि 2–

शिक्षक अनुस्वार एवं अनुनासिक से संबंधित एक अनुच्छेद बच्चों के सामने चार्ट/बोर्ड पर प्रस्तुत करेंगे जिसमें अनुस्वार एवं अनुनासिक से संबंधित विविध शब्द रहेंगे। इन विविध शब्दों को छाँटकर बताने/उच्चारण करने के लिए कहेंगे।

एक जंगल में एक मंदिर था। इसमें एक बंदर बहुत ही आनंदपूर्वक रहता था। पास के एक गाँव में एक लड़का बाँसुरी बजाता था। उसके पास एक ऊँट था जिसके मुँह में साँप आकर लिपट गया। उसने अपनी बाँसुरी से साँप पर प्रहार किया तथा जोर से चिल्लाने लगा। इतने में गाँव वाले आ गए। उन्होने साँप को भगा दिया तथा ऊँट की जान बच गई। बंदर पास के छत पर बैठे हुए यह सब देख रहा था। वह सावधान हो गया।

निर्देश– शिक्षक बच्चों को उपर्युक्त अनुच्छेद को अपनी अभ्यास पुस्तिका/कॉपी में लिखने को कहेंगे तथा यह बताएँगे कि अनुस्वार, अनुनासिक से संबंधित जो भी शब्द हैं उन्हें गोल घेरे में करें।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को यह बताएँगे कि–

अनुस्वार स्वर के बाद आने वाली ध्वनि है। इसकी ध्वनि नाक से निकलती है। इसका उच्चारण स्वर के बाद ही होता है, जैसे– पंक्ति, Üृंगार, वंचित, संस्कृति, सौंदर्य आदि।

अनुनासिक स्वरों के उच्चारण में मुँह से अधिक तथा नाक से बहुत कम साँस निकलती है। इन स्वरों पर चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग होता है जो कि शिरोरेखा के ऊपर लगता है, जैसे– आँख, माँ, गाँव, आँगन, दाँत आदि।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक और कार्यपत्रक संख्या दो को पत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 5

दिवस–23

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे स्वयं सार्थक शब्द बना लेते हैं।

सहायक सामग्री– वस्तुओं, फलों, पक्षियों, पशुओं आदि के चित्र कार्ड, शब्द कार्ड।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को बड़े गोल घेरे में खड़ा करेंगे। शुरुआत बातचीत से करेंगे – हम लोग एक खेल खेलेंगे जिसका नाम है पहचानो तो जानो

1– चित्र कार्डों को मेज पर उलट कर रखेंगे।

2– बच्चों को बारी–बारी से बुलाकर चित्र कार्ड उठाकर देखने को कहेंगे।

3– अब चित्र को पहचानकर नाम बताने को कहेंगे।

ध्यान देने योग्य बातें– पहले दो अक्षर के नाम वाले शब्द/चित्र कार्ड, फिर तीन और अन्त में चार अक्षरों के नाम वाले शब्द/चित्र कार्ड रखेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों से निम्नलिखित गतिविधियाँ करवाएँगे–

गतिविधि–1

खेल–खेल में लिखना सीखें –

*वर्णमाला लिखा चार्ट दीवार पर टाँगेंगे और शब्द कार्ड मेज पर फैला देंगे।

* बच्चों को बुलाकर शब्द कार्ड उठाने को कहेंगे।

* शब्द कार्ड के वर्णों को दीवार पर टंगे वर्णमाला चार्ट में ढूँढ़वाए और निशान लगवाएँ।

निशान लगाए गए वर्णों को पढ़वाएँ और क्रमवार श्यामपट्ट/कॉपी/अभ्यास पुस्तिका पर लिखवाएँ।

गतिविधि 2–

घूम–घूम कर शब्द बनाएं –

* सभी बच्चों को एक–एक अक्षर कार्ड देंगे।

* बच्चों को गोल घेरे में खड़ा करेंगे।

* सब एक दूसरे के अक्षरों को देखते रहेंगे।

* अध्यापक कोई शब्द बोलेंगे।

* बोले गए शब्द के अक्षर जिन बच्चों के पास हों वे बाहर निकलकर शब्द के वर्णों के क्रम में खड़े हो जाएँगे।

* शिक्षक बच्चों को सही क्रम में खड़ा होने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

* इन्हीं अक्षरों को क्रम से लिखवाकर शब्द बनावाएँ।

(ध्यान देने योग्य बातें)

* बच्चों को वितरित वर्ण ऐसे हों जिनसे बोले गये सार्थक शब्द आसानी से बन जाएँ।

बच्चों को शब्द लेखन की तकनीकियाँ– शिरोरेखा, वर्ण से वर्ण की दूरी भी बताएँगे।

* कार्यपत्रक में दिये गये अभ्यास की सहायता लें।

शिक्षण के अंत में

बच्चों को एक गद्य खण्ड पढ़ने के लिए दिया जाएगा।

पथ पर चल, सरपट मत चल।

बस पर चढ़, डर मत, बढ़ चल।

घर चल, छत पर मत चढ़।

अगर मगर मत कर, सच कह।

झटपट कर, बक–बक मत कर।

शिक्षक बच्चों से बारी–बारी से पढ़वाएँगे तथा पढ़ने में आ रही समस्याओं को दूर करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 5 | दिवस–24

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अमात्रिक शब्दों को पढ़ और लिख लेते हैं।

सहायक सामग्री– चित्रकार्ड, अक्षर कार्ड, पॉकेट बोर्ड, वर्णमाला चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

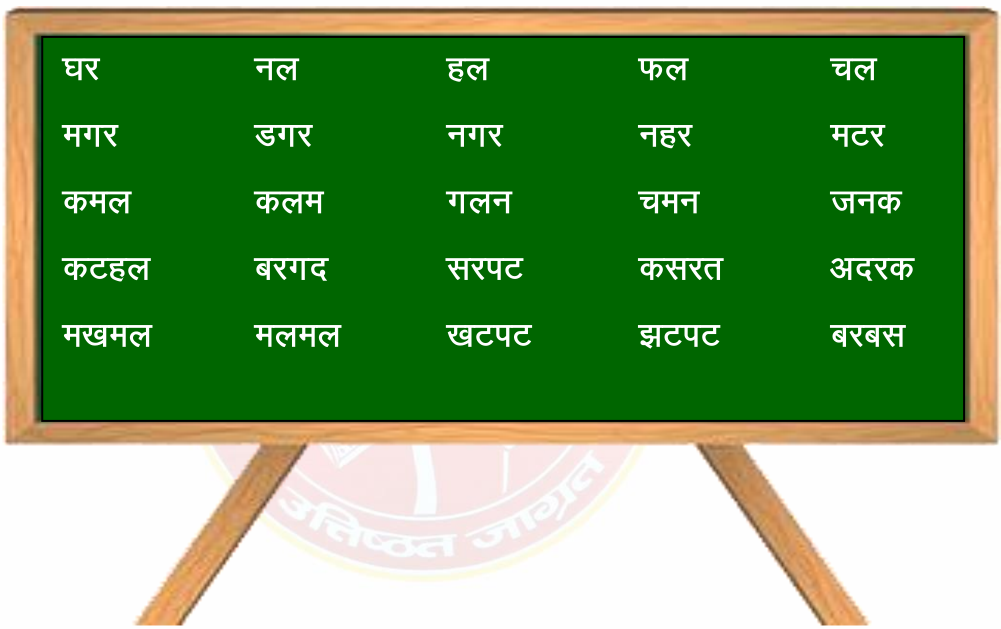

शिक्षक बच्चों से बातचीत करते हुए अमात्रिक शब्दों का उच्चारण करेंगे, जैसे– घर, नल, हल, मगर, मटर, कलम, कमल आदि। इन अमात्रिक शब्दों को श्यामपटट् पर लिखकर उच्चारण करेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक शिक्षण के दौरान बच्चों से निम्नलिखित गतिविधियाँ करवाएँगे–

शब्द बनाओ, नम्बर पाओ।

कक्षा में बच्चों को दो समूहों में बाँटकर दो पंक्तियों में बैठाकर कक्षा के बीच में अक्षर कार्ड फैलाएँगे। हर समूह से एक–एक बच्चे को बुलाकर आवाज होने तक/संगीत बजने तक अक्षर कार्डों के चारों ओर घूमने को कहेंगे।

आवाज के रुकते ही अध्यापक एक शब्द बोलेंगे, बोले गए शब्द के अक्षर कार्ड को बच्चे उठाएँगे और शब्द को श्यामपट्ट पर लिखेंगे।

यह कार्य जिस समूह का बच्चा सबसे पहले करेगा उसे 10 अंक तथा बाद में कार्य करने वाले बच्चों को क्रमशः 9, 8, 7 आदि अंक दिये जा सकते हैं। अंत में जिस समूह के बच्चों ने सबसे अधिक शब्द बनाए होंगे, उस समूह को शिक्षक विजयी घोषित करेंगे।

शिक्षण संकेत– पढ़ने एवं लिखने के कौशलों को विकसित करने के लिये पर्याप्त धैर्य और बार–बार अभ्यास कराना आवश्यक है। सार्थक और निरर्थक शब्दों पर चर्चा करते हुए बच्चों को सार्थक शब्द निर्माण के लिए प्रेरित करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को जोड़े में बैठाकर सार्थक शब्द बनवाएँ तथा उनका आकलन करें। समूह बनाते समय यह ध्यान रखें कि एक समूह में बच्चों का अधिगम स्तर अलग–अलग हो (सभी तेज बच्चे एक ही समूह में न हों)।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।

सप्ताह– 5

दिवस–25

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे मात्राओं को पहचान लेते हैं और मात्रिक शब्दों को पढ़ एवं लिख लेते हैं।

सहायक सामग्री– शब्द–कार्ड, चार्ट पेपर, कार्यपत्रक, कहानी की किताब।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

बच्चों के साथ बरसात के मौसम के संबंध में बातचीत की जाएगी उसके बाद शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर एक कविता का हाव–भाव के साथ गायन करेंगे–

जल की रानी, कितना पानी।
इतना पानी, उतना पानी ।
ऊपर पानी, नीचे पानी ।
इधर भी पानी, उधर भी पानी।
सभी ओर पानी ही पानी।

शिक्षण के मध्य

सर्वप्रथम बच्चों को तीन–चार समूहों में बैठाएँगे। प्रत्येक समूह में कुछ शब्द कार्ड और मात्रा कार्ड बाँटेंगे। शब्दों में मात्राएं लगाकर करने का अवसर देंगे–

नील + ी = नीली   चल + ी = चली

भाल + ू = भालू   काल + े = काले

बच्चों से आपस में कार्ड बदलवाकर पुनः गतिविधि कराएँगे तथा उनसे कहेंगे कि बनाये गये शब्दों को बोलते हुए अपनी नोटबुक में लिखें।

शिक्षक बच्चों को जोड़ों में बैठा कर कहेंगे कि आप लोग कार्यपत्रक संख्या एक में दी गई कविता को पढ़िए और जहाँ भी आपको मात्राएँ दिखाई दे रही हों उन पर गोला लगाइए। साथी बच्चे भी अँगुली रखकर सहायता करेंगे(बच्चे कार्यपत्रक भरेंगे और शिक्षक घूमकर अवलोकन करेंगे)।

अब बच्चो आपको समझ में आ गया होगा कि शब्दों में आवाज मात्रा के कारण ही बदलती है।

शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या एक में खाली स्थान भरने के लिए कहेंगे।

शिक्षक– बच्चों, अब हम एक मजेदार कहानी पढ़ेंगे और कहानी पढ़ने के बाद कुछ शब्दों का मिलान करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को जोड़ों में बैठाकर बच्चों को कार्यपत्रक संख्या दो देंगे और उनसे छूटी हुई मात्रा लगाने को कहेंगे।(शिक्षक बच्चों की सहायता करेंगे।)

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–26

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे क्रिया शब्दों की पहचान करते हैं और वाक्यों में उनका प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– कार्य–पत्रक, फ्लैश–कार्ड, विषयोपयोगी सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक संवाद विधि के माध्यम से दिए गए अनुच्छेद पर चर्चा करेंगे और कुछ प्रश्न पूछ कर बच्चों का ध्यान विषय पर केन्द्रित करने का प्रयास करेंगे।

एक बगीचे में चार बच्चे थे रानी, सोनी, मोनू, सोनू। रानी बगीचे में रस्सी कूद रही थी। सोनू पौधों को पानी दे रहा था। मोनू गाना गा रहा था। सोनी फूलों की माला बना रही थी।

क– बगीचे में कौन–कौन था?

ख– रानी बगीचे में क्या कर रही थी?

ग– सोनू क्या कर रहा था?

घ– फूलों की माला कौन बना रही थी?

शिक्षण के मध्य

बच्चों द्वारा दिए गए उत्तर एवं चार्ट के माध्यम से शिक्षक बच्चों से चर्चा–परिचर्चा करेंगे। चर्चा के दौरान शिक्षक यह बताने का प्रयास करेंगे कि जिन शब्दों से किसी कार्य के होने का पता चलता है उसे ही 'क्रिया' कहते हैं।

गतिविधि 1–

शिक्षक सभी बच्चों को कार्यपत्रक संख्या 3 की कहानी में से क्रिया शब्दों की पहचान कर लिखने के लिए कहेंगे।

गतिविधि 2–

शिक्षक क्रिया की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कार्यपत्रक संख्या तीन देंगे और दी गई अधूरी कहानी को सही शब्दों की सहायता से पूरी करने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

अंत में शिक्षक क्रिया की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए परिभाषा बताएँगे–

जिन शब्दों से किसी कार्य के होने का पता चलता है, उसे 'क्रिया' कहते हैं।

शिक्षक कार्यपत्रक संख्या दो के माध्यम से यह जानने का प्रयास करेंगे कि बच्चा सीखने की प्रक्रिया में कहाँ पर है और बीच–बीच में बच्चों का मार्गदर्शन भी करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक सभी बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक के अनुसार दिए गए क्रिया शब्दों से वाक्य बनाकर लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 6

दिवस–27

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विलोम शब्दों को बताते हैं।

सहायक सामग्री– कुछ शब्द कार्ड, जैसे– हँसना, बड़ा, रोना, छोटा आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को विलोम शब्दों से युक्त एक कविता सुनाएँगे–

रोता बंदर, हँसता मोर
अंदर चुप है, बाहर शोर
ऊँचा पर्वत, नीची घाटी
राजू लम्बा, रीता छोटी
पतली रस्सी, भालू मोटा
बड़ा सा कुर्ता, पड़ गया छोटा।

कविता को श्यामपट्ट पर लिखकर इसे बच्चों से दुहराने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक कविता में आए ऐसे शब्दों पर बच्चों से बात करेंगे जो एक दूसरे के ठीक विपरीत या उल्टा अर्थ देते हैं, जैसे–

रोना – हँसना

अंदर – बाहर

ऊँचा – नीचा

मोटा – पतला

बड़ा – छोटा

अब शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि **"ऐसे शब्द जो एक दूसरे के विपरीत अर्थ देते हैं उन्हें विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहते हैं।"** अब कविता में आए विलोम शब्दों पर बच्चों से गोला बनवाएँ।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कार्यपत्रकों की जाँच करने के बाद जिन बच्चों को विलोम शब्द समझने में कठिनाई उत्पन्न हो रही हो उनका समाधान करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–28

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे पर्यायवाची शब्दों की पहचान कर लेते हैं। इन शब्दों का दैनिक जीवन में प्रयोग भी करते हैं।

सहायक सामग्री– चित्रों का फ्लैश कार्ड, मार्कर, रंग, छोटी वीडियो क्लिप।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कविता का आदर्श पाठ करेंगे–

एक वस्तु के हैं कई नाम,
सूरज को हम दिनकर कहते।
दिनकर का ही दिवाकर नाम,
दिवाकर को प्रभाकर कहते।
उगे सवेरे डूबे हर शाम,
प्रकाश फैलाना इसका काम।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक कविता का आदर्श पाठ करने के बाद सस्वर पाठ करवाएँगे और साथ ही कुछ प्रश्न करते हुए आगे बढ़ेंगे।

शिक्षक– आपका क्या नाम है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– घर पर आपको किस नाम से बुलाते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– ऐसे ही आप पानी को भी किन–किन नामों से जानते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

इसी प्रकार हमारे आसपास जो कुछ भी मौजूद है उनके एक से अधिक नाम हो सकते हैं, इन्हीं को पर्यायवाची शब्द या समानार्थी शब्द कहते हैं।

गतिविधि–

श्यामपट्ट पर लिखकर गतिविधि करवाएँगे– मिलान करें, कौन किसका पर्याय/समानार्थी है।

अग्नि	हाथ
कर	आग
कान	अनादर
अपमान	कर्ण

इस गतिविधि को कराने के बाद शिक्षक बच्चों को कुछ शब्द कार्ड दिखाकर उसका पर्यायवाची/ समानार्थी शब्द बनाने को कहेंगे।

सूर्य	रात	चंद्रमा	नदी
रानी	आँख	आकाश	आम
ईश्वर	इंद्र	देवता	गंगा

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कक्षा में हर बच्चे के पास जाएँगे और उनकी कठिनाइयों का निवारण करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–29

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे चित्र/पोस्टर देखकर एवं कविता, कहानी सुनकर अपनी कल्पना शक्ति का विकास करते हैं।

सहायक सामग्री– चित्र, पोस्टर, कहानी की किताब, कविता की किताब आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक शिक्षण की शुरुआत एक गतिविधि से करेंगे। शिक्षक बच्चों से एक पहेली पूछेंगे–

आसमान तक जाती है,
सबके मन को भाती है,
नीली, पीली, लाल, बैंगनी
डोर के संग लहराती है।
ऊपर उड़ना इसका काम,
बूझो बच्चों इसका नाम।

(कुछ बच्चे बोलेंगे पतंग।)

अब शिक्षक पोस्टर दिखाते हुए बच्चों से यह अनुमान लगाने को कहेंगे कि आज हम कौन सी कविता पढ़ेंगे और उसमें क्या–क्या दिखाई दे रहा है?

शिक्षक कथन	संभावित उत्तर
1– आपने आसमान में उड़ते हुए क्या–क्या देखा है?	चिड़ियाँ, जहाज, पतंग
2– हम किस वस्तु को धागे से बाँधकर	पतंग

उड़ाते भी हैं और लड़ाते भी हैं?

3– क्या हम लोहे की पतंग भी उड़ा सकते हैं? नहीं

शिक्षण के मध्य

गतिविधि 1–

शिक्षक बच्चों के समक्ष हाव–भाव और लय के साथ कविता का गायन करेंगे। यह गायन बच्चों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर एक से अधिक बार भी किया जा सकता है।

अब शिक्षक कविता को स्वयं दुहराते हुए बच्चों से एक–एक पंक्ति का गायन करवाएँगे। शिक्षक पुनः अलग–अलग बच्चों से कविता का गायन करवाएँगे।

पूरी कविता का सस्वर वाचन करने के बाद बच्चों से कविता में प्रयुक्त समान ध्वनि वाले शब्दों को लिखने के लिए कहेंगे, जैसे– चटक-मटक।

गतिविधि 2–

शिक्षक बच्चों से कविता का गायन करवाएँगे, जैसे– कविता इस प्रकार हो सकती है (इस प्रकार की अन्य कविताएं भी हो सकती हैं)।

लाल, नीली, पीली पतंग
बच्चों के मन में भरे उमंग
डोर बँधी पर उड़े गगन में
खेलें बच्चे घर आँगन में।

शिक्षक कक्षा में बच्चों को दो समूहों में बाँटेंगे। प्रथम समूह से कविता का पाठ करवाएँगे तथा दूसरे समूह से कविता पर आधारित प्रश्नों का निर्माण करने को कहेंगे

ताकि उनकी कल्पना शक्ति का विकास हो सके। इस गतिविधि में प्रश्न का निर्माण भी करवा सकते हैं, जैसे–

प्रथम समूह	द्वितीय समूह
(क) लाल, नीली, पीली पतंग	कविता में पतंग का रंग क्या है?
(ख) बच्चों के मन में भरे उमंग	पतंग सबसे ज्यादा किसे पसंद आती है?
(ग) डोर बँधी पर उड़े गगन में	1– पतंग कहाँ उड़ती है? 2– पतंग किससे बँधी होती है?

इसी प्रकार अन्य प्रश्न भी बनाए जा सकते हैं।

उपर्युक्त गतिविधि कविता के पूर्ण होने तक जारी रहेगी। शिक्षक द्वारा कविता में आए कठिन शब्दों का अर्थ बताया जाएगा एवं बच्चों को कागज से पतंग बनाने की प्रक्रिया भी बताई जाएगी।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को पूरी कविता का सारांश बताने के बाद उनका आकलन करेंगे। शिक्षक बच्चों से पुनरावृत्ति के कुछ प्रश्न करेंगे और आने वाली कठिनाइयों का निराकरण करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–30

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे सुनी व पढ़ी हुई रचनाओं की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों के शीर्षक आदि के विषय में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं और अपने विचार रखते हैं।

सहायक सामग्री– जानवरों के चित्र, कार्य–पत्रक, पुस्तक की कहानी, स्वनिर्मित कहानी आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से किसी सुनी गई कहानी पर बातचीत करेंगे। (जो भी कहानी बच्चे सुनाएँगे उस पर बात करेंगे, यदि बच्चों द्वारा कोई कहानी न सुनाई जाए तो आप गाँव की किसी घटना को भी सुनाने को कह सकते हैं) आगे की चर्चा में बच्चों से पूछेंगे कि तुमको कौन सी कहानी अच्छी लगती है? (कम से कम पाँच बच्चों से उनकी रुचि पूछें) जानवर वाली, मिठाई वाली, खेलकूद वाली या मेले वाली। बच्चे इस पर अपना जवाब देंगे। शिक्षक अपनी योजना के अनुसार चुने गए प्रपत्र के आधार पर कार्य प्रारंभ करेंगे।

शिक्षण के मध्य

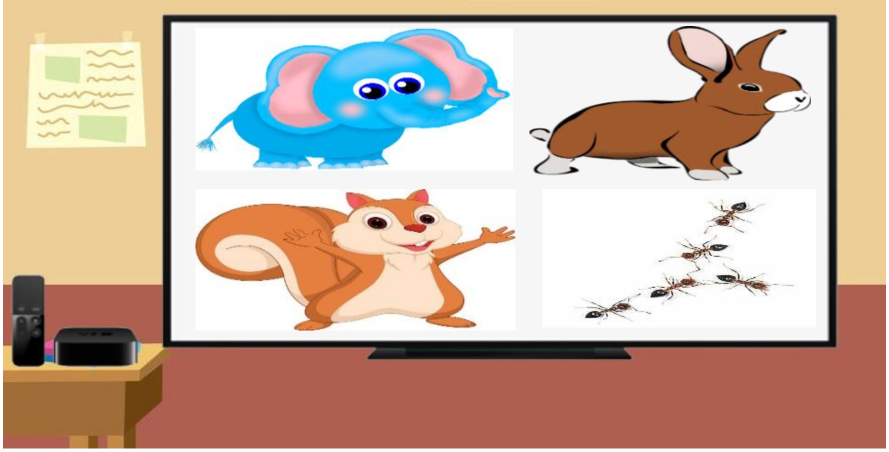

शिक्षक चार जानवरों के चित्र दिखाएँगे, जैसे– हाथी, गिलहरी, खरगोश और चींटी। इस पर एक छोटी कहानी प्रस्तुत करेंगे।

एक जंगल में कई जानवर रहते थे, उनमें से हाथी, गिलहरी, खरगोश और चींटी में गाढ़ी मित्रता थी। एक दिन जंगल में कुछ लोग आए, गिलहरी, चींटी और खरगोश जिस पेड़ के पास रहते थे, वहीं रहने लगे। एक दिन वे लोग उस पेड़ के नीचे खाना बना रहे थे कि तभी आग लग गई। यह देख कर चींटी, गिलहरी और खरगोश घबरा गए। खरगोश दौड़कर हाथी के पास पहुँचा और बताया कि मित्र! हमारे घरों को आग से बचा लो। हाथी तुरंत पास के तालाब में गया और अपनी सूँड़ में ढेर सारा पानी भरकर लाया। जहाँ पर आग लगी थी वहाँ पर पानी उड़ेल दिया और आग बुझ गई। जो लोग वहाँ खाना बना रहे थे, वे हाथी को आता देखकर अपना सारा सामान लेकर भाग गए और इस प्रकार गिलहरी, खरगोश और चींटी का घर जलने से बच गया।

शिक्षण के अंत में

इस कहानी में बच्चों को भी सम्मिलित करें, जैसे– इस कहानी में जो भी पात्र हैं उनके नाम के समूह बनाएं और जब उन पात्रों के नाम पढ़े जाएं तब बच्चे अपने स्थान पर खड़े होकर फिर तुरंत बैठ जाएँगे। यह कहानी शिक्षक एक बार धीमी गति से तथा दूसरी बार तीव्र गति के साथ पढ़ेंगे। बच्चे उसी के अनुसार अपनी जगह पर खड़े होंगे और तुरंत बैठेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–31

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे गद्य/पद्य में निहित भावों को समझकर अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं और लिखते हैं।

सहायक सामग्री– गद्यांश और पद्यांश, चार्ट पेपर, श्रव्य/दृश्य सामग्री, कार्यपत्रक आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षण की शुरुआत में शिक्षक बच्चों से कविता/कहानी सुनेंगे/सुनाएँगे।

शिक्षण के मध्य

निम्नलिखित कविता/कहानी पर बच्चों के साथ काम करेंगे–

एक बार एक जंगल में आग लग गई। सभी जानवर आग बुझाने में जुट गए। जिसके हाथ में जो भी पात्र आया वह उसमें पानी भर कर आग में डालने लगा। सभी को आग बुझाने में जुटा देख एक नन्हीं गौरैया भी अपनी चोंच में पानी भर–भर कर आग में डालने लगी। एक कौवा दूर सुरक्षित डाल पर बैठा तमाशा देख रहा था। वह गौरैया के पास आकर बोला– "नन्हीं गौरैया! क्यों बेकार मेहनत कर रही हो? तुम्हारी नन्हीं चोंच का बूँद भर पानी इस भयंकर आग को बुझाने में क्या सहायता कर पाएगा?" गौरैया बोली– "यह तो मैं भी जानती हूँ, परन्तु यदि कभी इस आग के बारे में बात होगी, तो मेरा नाम आग लगाने वालों अथवा तमाशा देखने वालों में नहीं बल्कि आग बुझाने वालों में लिया जाएगा।"

विमल इन्दु की विशाल किरणें
प्रकाश तेरा बता रही हैं
अनादि तेरी अनन्त माया
जगत को लीला दिखा रही हैं।

गतिविधि–

सर्वप्रथम शिक्षक कक्षा के बच्चों को दो समूहों में बाँट देंगे–

1– गद्य समूह

2– पद्य समूह

गद्य समूह कहानी पर केन्द्रित होगा जबकि पद्य समूह कविता पर केन्द्रित होगा। शिक्षक गद्य समूह को कहानी सुनाएँगे तथा कहानी में आए बिंदुओं (जैसे– प्रारंभ, आश्चर्यजनक) पर रुचिकर ढंग से प्रस्तुति देंगे और बच्चों से अनुकरण वाचन करने के लिए कहेंगे। यह प्रक्रिया दो बार की जा सकती है। शिक्षक कहानी के आधार पर प्रश्न निर्माण, कहानी के केन्द्रीय भाव एवं शीर्षक पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

पद्य समूह जो कि कविता पर केंद्रित है, शिक्षक सर्वप्रथम कविता का गायन करेंगे और बच्चों से सस्वर गायन करने के लिए कहेंगे। जिसमें बच्चों के उचित हाव–भाव का ध्यान रखा जाएगा। सुर–लय या आरोह अवरोह में आ रही कमियों का ध्यान रखकर शिक्षक उसका निवारण करेंगे।

शिक्षक दोनों समूहों को गद्य एवं पद्य के भावों और इसमें क्या अंतर है, समझाएँगे साथ ही साथ कविता/कहानी में आए हुए कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखते हुए उन शब्दों के अर्थ भी समझाएँगे, जैसे– इन्दु, विमल, अनादि, अनंत, माया, लीला, पात्र, भयंकर आदि।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक व दो में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करने के लिए कहेंगे। शिक्षक पत्रक को पूर्ण करने में बच्चों का अपेक्षित सहयोग करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन को दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 7

दिवस–32

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे दैनिक जीवन की घटनाओं से संबंधित विषय द्वारा कहानी का निर्माण कर लेते हैं।

सहायक सामग्री– विभिन्न प्रकार के दृश्य चित्र, कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से उनके आस–पास पाई जाने वाली वस्तुओं के बारे चर्चा करेंगे। चर्चा के बिन्दु निम्नलिखित प्रकार के होंगे–

शिक्षक– आज विद्यालय आते समय आपने क्या–क्या देखा?

बच्चे– ...संभावित उत्तर।

शिक्षक– इन सब के अलावा आपने और क्या देखा?

बच्चे– ...संभावित उत्तर।

(शिक्षक बच्चों को बोलने का पर्याप्त अवसर प्रदान करेंगे।)

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों से जीव–जन्तुओं के स्वभाव– वे खाने में क्या पसंद करते हैं? कब सोते हैं? इत्यादि पर प्रश्न पूछते हुए चर्चा करेंगे तथा उनके उत्तर को श्यामपट्ट पर संक्षेप में लिखेंगे।

शिक्षक कार्यपत्रक में आये हुए पात्रों के बारे में कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखेंगे। बच्चों को कार्यपत्रक में कहानी निर्माण हेतु प्रेरित करेंगे। शिक्षक बच्चों को किसी दूसरे चित्र पर कहानी सुनाने के बाद भी यह कार्य करा सकते हैं।

*शिक्षक बच्चों को आवश्यक सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

* बच्चों के छोटे–छोटे समूह बनाकर कहानी का प्रस्तुतीकरण करवाएँगे।

* सभी समूहों द्वारा निर्मित कहानियों की सराहना करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक स्वयं के द्वारा निर्मित कोई कहानी सुनाएँगे तथा बच्चों से उस कहानी से संबंधित प्रश्न पूछने को कहेंगे।

बच्चों से इसी प्रकार की अन्य परिस्थितियों, जैसे–

1. फर्श पर तेल गिर जाना।
2. फर्श पर केले का छिलका गिर जाना।
3. चूहे बिल्ली का आमना–सामना।

पर भी एक कहानी बनाने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–33

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे दी गई कहानी को पढ़ते हुए उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देते हैं तथा कहानी को क्रम में लिखते हैं।

सहायक सामग्री– कहानी चार्ट, शब्द–वाक्य निर्माण–पट्टी।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

लकड़हारा और वनदेवी

एक गरीब लकड़हारा था। एक दिन वह नदी के किनारे पेड़ पर बैठकर लकड़ियाँ काट रहा था कि अचानक उसकी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई। वह बहुत दुःखी हो गया। उसी समय वनदेवी प्रकट हुईं। उनके हाथों में सोने की कुल्हाड़ी थी। वनदेवी ने लकड़हारे से कहा– "अगर यह तुम्हारी कुल्हाड़ी है तो तुम इसे ले लो।" लेकिन लकड़हारे ने सोने की कुल्हाड़ी लेने से मना कर दिया। लकड़हारे की ईमानदारी से वनदेवी प्रसन्न हुई और उन्होंने उसे उसकी कुल्हाड़ी के साथ सोने की कुल्हाड़ी भी उपहार स्वरुप दे दी।

शिक्षक उक्त कहानी को उचित हाव–भाव एवं आरोह–अवरोह के साथ शुद्ध रुप से पढ़ेंगे। उसके बाद बच्चे कहानी का अनुकरण वाचन करेंगे। साथ ही कठिन शब्दों को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखते जाएँगे।

शिक्षण के मध्य

(क) शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखे गए शब्दों का सरलीकरण करेंगे।

(ख) शिक्षक बच्चों से निम्नलिखित शब्दों की सहायता से वाक्य निर्माण करवाएँगे–

प्रकट–

ईमानदारी–

उपहार–

प्रसन्न–

कक्षा के दौरान चर्चा हेतु प्रश्न–

प्र० 1– लकड़हारा क्या करता है?

प्र० 2– सोने की कुल्हाड़ी लेकर कौन प्रकट हुआ?

प्र० 3– अगर लकड़हारे के स्थान पर आप होते तो क्या करते?

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पत्रक को पूर्ण करने के लिए कहेंगे।

प्रदत्त कार्य

- अपनी कॉपी में अपनी पसंद की कोई एक कहानी घर से लिखकर लाएँगे।

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–34

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे स्वतंत्र लेखन कार्य करते हैं, तथा पाठ्य पुस्तक में दिए गए अभ्यास कार्य करते हैं।

सहायक सामग्री– कहानी से संबंधित चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक पाठ्य–पुस्तक का प्रयोग करते हुए कुछ चित्र बच्चों को दिखाएँगे और चित्र में हो रहे कार्यों के बारे में बातचीत या चर्चा करेंगे।

बच्चों को एक अधूरी कहानी सुनाएँगे–

कहानी– मेंढक का घर

एक तालाब में दो मेंढक रहते थे। वे दोनों वहाँ बड़े आनन्द में अपना जीवन बिता रहे थे। न तो उन्हें किसी बात की चिंता थी और न ही कोई शिकायत, लेकिन जैसे ही गर्मियों का दिन आया तालाब सूखने लगा। एक दिन वह पूरी तरह सूख गया। अब मेंढकों को चिंता सताने लगी कि वे अपना आवास कहाँ बनाएँ? उन्हें विवश होकर वह स्थान छोड़ना पड़ा ....।

शिक्षक बच्चों कुछ से प्रश्न करेंगे –

प्रश्न– सोचो और बताओ कि आगे क्या हुआ होगा?

प्रश्न– पानी नहीं होगा , तो क्या–क्या हो सकता है?

शिक्षण के मध्य

शिक्षण के दौरान शिक्षक कुछ ऐसे जीव–जन्तुओं के नाम बच्चों से पूछेंगे, जो पानी में रहते हैं, जैसे– मछली, मगरमच्छ, केकड़ा और कछुआ इत्यादि । उनके विषय में बात करें तथा उन्हें उन बातों को लिखने को कहें।

यह बातचीत कुछ प्रश्नों के माध्यम से करेंगे और बच्चों से उनके उत्तर लिखने को कहेंगे तथा दिये गये कार्यपत्रक भरने को कहेंगे।

प्रश्न–1. मगरमच्छ, मछली, केकड़ा और कछुआ सब पानी में रहते हैं। इनमें से कौन खतरनाक जीव है और क्यों?

उत्तर– ....

प्रश्न–2. उन जीवों के नाम लिखें जो पानी में रहते हैं और उनका आकार बहुत बड़ा है?

उत्तर – ....

प्रश्न–3. पानी हमारे किन–किन कार्यों में प्रयोग होता है?

उत्तर – ....

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कार्यपत्रकों की जाँच करेंगे तथा जिन बच्चों को समस्या हो रही हो उनका सहयोग करेंगे।

प्रदत्त कार्य– पानी में रहने वाले किसी एक जन्तु और जमीन पर रहने वाले किसी एक जन्तु का चित्र बनाकर लाएँ।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–35

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे समाचार पत्र पढ़ते हैं और अपने विचार व्यक्त करते हैं। नई जानकारियों पर चर्चा करते हैं और समाचार–पत्र का निर्माण करते हैं।

सहायक सामग्री– समाचार–पत्र(जिसमें स्कूल, शैक्षिक परिवेश और बच्चों से संबंधित समाचार प्रमुखता से छपे हों)।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को समाचार–पत्र दिखाते हुए कुछ प्रश्न करेंगे–

प्रश्न	संभावित उत्तर
(क) यह क्या है ?	(समाचार पत्र, अखबार)
(ख) समाचार–पत्र हमें कौन देता है ?	(पेपर वाला, अख़बार वाला)
(ग) समाचार–पत्र में क्या–क्या लिखा होता है ?	(समस्या)

बच्चों को चार समूहों में बाँटकर शिक्षक समाचार–पत्र बच्चों के बीच वितरित करेंगे। बच्चों के द्वारा समाचार–पत्र का अवलोकन किया जाएगा तथा समाचारों पर आपस में चर्चा की जाएगी।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों से प्रश्न करेंगे–

प्रश्न – आपको कितने तरह के समाचार पढ़ने को मिले?

संभावित उत्तर– राष्ट्रीय समाचार, खेलकूद, विज्ञापन, क्षेत्रीय समाचार।

प्रश्न– पढ़े गए किसी एक समाचार के बारे में बताएँ।

संभावित उत्तर– ...

गतिविधि–

अपने विद्यालय के लिए एक समाचार पत्र का निर्माण कीजिए तथा उसका नाम रखिए। (शिक्षक बच्चों की सहायता करें।)

गतिविधि

बच्चों के चार समूह क, ख, ग, घ बनवाएँ। बच्चों को समाचार पत्र से चित्र और खबरें काटकर चस्पा करने के लिए कहें, इन्हें छोटे–छोटे समूहों में अलग–अलग फाइल में रखें।

बच्चों की शिक्षा से संबंधित	**राष्ट्रीय समाचार**	**अन्तर्राष्ट्रीय खेलकूद/ विज्ञापन से संबंधित**	**क्षेत्रीय समाचार**
समूह (क)	**समूह(ख)**	**समूह(ग)**	**समूह(घ)**

चर्चा के दौरान ही शिक्षक समाचार के निम्नलिखित बिंदुओं पर बच्चों के साथ वार्ता की करेंगे–

(1) मुख्य समाचार

(2)समाचार को शीर्षक देना– शिक्षक यह स्पष्ट करेंगे कि शीर्षक से पूरे समाचार का सारांश समझ में आ जाता है।

(3) विज्ञापन का महत्त्व

(4) समाचार पत्र की उपयोगिता

शिक्षण के अंत में

दिए गए अनुच्छेद/समाचार के माध्यम से निम्नलिखित गतिविधियां कराई जाएँगी।

वाराणसी जनपद के पूर्व माध्यमिक विद्यालय रुस्तमपुर के बच्चों ने क्षेत्रीय खेलकूद प्रतियोगिता में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उन्होंने जूडो, कराटे, शतरंज, कैरम, बैडमिंटन, क्रिकेट और हॉकी में अपनी प्रतिभा दिखाई। प्रतियोगिता का आयोजन प्रतिवर्ष बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा किया जाता है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को पुरस्कार और प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया।

- उपर्युक्त समाचार किसके संदर्भ में है ?
- उपर्युक्त समाचार का एक शीर्षक दीजिए।
- अपने विद्यालय की खेलकूद प्रतियोगिता का विवरण समाचार के प्रारूप में लिखिए।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 8

दिवस–36

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कहानी के माध्यम से अपने शब्दकोश में वृद्धि करते हैं।

सहायक सामग्री– चित्र, कहानी का पोस्टर, कहानी की आडियो–विडियो क्लिप।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कक्षा में बच्चों से सामान्य बातचीत करते हुए एक छोटी सी गतिविधि करेंगे–

शिक्षक– रोहित आज तुम अपनी पेंसिल कैसे भूल गए? अब तुम सत्यम से पेंसिल माँगो क्योंकि उसके पास दो पेंसिल है।

रोहित– सत्यम कृपया! मुझे एक पेंसिल दे दो।

सत्यम– तुम्हारा स्वागत है मित्र मुझे खुशी हुई।

अब शिक्षक इस संवाद में आए हुए नये शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखेंगे और बच्चों से चर्चा करेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को एक कहानी सुनाएँगे–

एक कौआ सोचने लगा कि पक्षियों में मैं सबसे ज्यादा कुरूप हूँ। ना तो मेरी आवाज ही अच्छी है ना ही मेरे पंख सुन्दर हैं। मैं बहुत अकेला भी हूँ। ऐसा सोचने से उसके अन्दर हीन–भावना भरने लगी और वह दुःखी रहने लगा। एक दिन एक बगुले ने उसे उदास देखा तो उसकी उदासी का कारण–पूछा। कौवे ने कहा कि 'तुम कितने सुंदर हो, गोरे चिट्टे हो, मैं तो बिल्कुल स्याह वर्ण का हूँ। मेरा तो जीना ही बेकार

है।' बगुला बोला– 'मैं कहाँ सुंदर हूँ। मैं जब तोते को देखता हूँ तो यही सोचता हूँ कि मेरे पास हरे पंख और लाल चोंच क्यों नही है?' अब कौवे में सुंदरता को जानने की उत्सुकता बढ़ी। वह तोते के पास गया और बोला– 'तुम इतने सुंदर हो, तुम तो बहुत खुश होते होगे।'

तोता बोला– 'खुश तो था लेकिन जब मैंने मोर को देखा तब से बहुत दुःखी हूँ क्योंकि वह बहुत सुन्दर होता है। कौआ मोर को ढूँढ़ने लगा, लेकिन जंगल में कहीं मोर नहीं मिला। जंगल के पक्षियों ने बताया कि सारे मोर चिड़ियाघर वाले पकड़ ले गए। कौआ चिड़ियाघर गया। वहाँ पिंजरे में बंद मोर से जब उसकी सुंदरता की बात की तो मोर रोने लगा और बोला– 'शुक्र मनाओ कि तुम आजाद हो।'

कहानी सुनाने के उपरांत शिक्षक कहानी में आए कुछ नये शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखेंगे और बच्चों से इन शब्दों के बारे में प्रश्न करेंगे, जैसे–

उदास	–	दुःखी
उत्सुकता	–	जानने की इच्छा
हीन–भावना	–	आत्मविश्वास की कमी का भाव
ढूँढ़ना	–	खोजना
पिंजड़ा	–	लोहे/बाँस की तीलियों का बना हुआ बक्सा
चिड़ियाघर	–	पशु पक्षियों को रखने का स्थान
आजाद	–	स्वतन्त्र

शिक्षण के अंत में

शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखे गए शब्दों के आधार पर बच्चों से आपसी बातचीत की जाएगी तथा वाक्य निर्माण करवाए जाएँगे। तत्पश्चात् निम्नलिखित प्रश्न किए जाएँगे–

1– सभी मोरों को पकड़कर कहाँ ले जाया गया?

2– पिंजरे में बंद पक्षी क्यों दुखी रहते हैं?

कक्षा को दो समूहों में विभाजित किया जाएगा और प्रत्येक समूह अधिक से अधिक ऐसे वाक्यों की सूची बनाएगा जिसमें नये शब्दों का प्रयोग हो। अब समूह 'क' और समूह 'ख' आपस में इन शब्दों को क्रमशः बोलेंगे।

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करने के लिए कहेंगे। शिक्षक पत्रक को पूर्ण करने में बच्चों का अपेक्षित सहयोग करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 8

दिवस–37

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे सामान्य बातचीत व लेखन में लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– फ्लैश कार्ड, कहानी आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कहानी सुनाएँगे–

रोहन अपनी माँ की आँख का तारा था। वह दिन भर धमाचौकड़ी मचाता था। पढ़ाई से वह हमेशा दूर भागता था। उसके पिता उसकी इस हरकत को देखकर आग–बबूला हो जाते थे। पिताजी को देखकर रोहन नजर चुरा कर नौ दो ग्यारह हो जाता था। उसकी बहन सीमा कक्षा में प्रथम आती थी, जिसके कारण वह अपने पिता के आँखों की पुतली बनी हुई थी। पिता का रीमा से प्रेम देखकर रोहन जल भुन जाता था। रोहन की माँ ने उसके इस भाव को देखकर रोहन को समझाया कि उसे भी अपनी बहन की तरह ही मेहनत करनी चाहिए। उसने जी तोड़ मेहनत कर कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया और वह भी पिता के आंखों का तारा बन गया।

(शिक्षक इस कहानी को सुनाते हुए श्यामपट्ट पर भी लिखेंगे।)

शिक्षण के मध्य

शिक्षण के दौरान शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखी कहानी में मुहावरों को चाक द्वारा इंगित करते हुए बच्चों से उसके बारे में प्रश्न करेंगे (बच्चे उत्तर दे भी सकते हैं नहीं भी) शिक्षक बच्चों को बताएँ कि किसी भी बात को एक विशेष तरीके से यदि बोला जाए, जैसे– आँख का तारा होना, धमा–चौकड़ी मचाना, आग बबूला हो जाना आदि इसे मुहावरा कहते हैं। आज हम मुहावरे की पहचान करेंगे और उनका अर्थ

समझेंगे। शिक्षक बच्चों को गतिविधियों के लिए कहानी कार्यपत्रक देकर उस पर कार्य करने को कहेंगे। बच्चों को दो–दो के जोड़े में बैठाकर कार्य पूर्ण करवाएँगे।

कहानी में आए मुहावरों को रेखांकित करेंगे–

राजा शेर सिंह के आने से नन्दन वन के दिन फिर गए। सभी जानवर एक दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने लगे। एक दिन गांव से चिंकी बिल्ली वन में आई। वन में मोटे–मोटे चूहे को दूसरे जानवरों के साथ खेलते देखा। चिंकी बिल्ली के मुंह में पानी आ गया। वह जानवरों के पास गई और अपने गांव की एकता के बारे में तारीफों के पुल बांधने लगी। जब जंबो हाथी वहाँ आया, उसने चिंकी से कहा, "चिंकी मौसी, क्यों अपने मुंह मियां मिट्ठू बन रही हो? मैंने तुम्हारा गाँव देखा है। तुम यहाँ हमारी आँखों में धूल झोंक कर नन्हे साथी चूहों को खाना चाहती हो क्योंकि तुम्हारा मन काला है। हाथी की बात सुनकर बिल्ली के होश उड़ गए। चूहे भी वहाँ से जान बचाकर भागे और बिल्ली सब की आँख बचाकर नौ दो ग्यारह हो गई।

मुहावरों को उनके अर्थ से मिलाओ।

आग बबूला होना	गहरी नींद में सोना
घोड़े बेच कर सोना	अत्यधिक क्रोध करना
दाँत खट्टे करना	अनुचित शब्द बोलना
खिल्ली उड़ाना	मजाक उड़ाना

शिक्षण के अंत में

कार्यपत्रकों की जाँच करने के बाद जिन बच्चों को समझने में कठिनाई आ रही हो उनका समाधान करेंगे और एक बार पुनः कुछ मुहावरों को दुहराते हुए समझाएँ।

प्रदत्त कार्य– अपनी माता जी, दादी जी या किसी अन्य बड़े से उन मुहावरों को पूछ कर लिखें जो आपके गाँव की बोली में बहुतायत प्रयोग में लाए जाते हैं।

सप्ताह– 8

दिवस–38

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अपने विचारों को अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त करते हैं।

सहायक सामग्री– कविता चार्ट, कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से सामान्य बातचीत करते हुए, जैसे–

- आप सब कैसे हैं?
- विद्यालय में आते समय आप ने क्या–क्या देखा?

इस पर बच्चों के अनुभवों को एक–एक करके सुनते हुए बात को आगे बढ़ाएँगे।

शिक्षक द्वारा एक कविता का गायन किया जाएगा जिसका बच्चे अनुगायन करेंगे–

**"पेड़ हमारे साथी हैं,
छाया हमको देते हैं
बाढ़ से हमें बचाते हैं
मीठा स्वाद दिलाते हैं
हम भी पेड़ लगाएं,
गाँव हरित बनाएं।"**

उसके बाद शिक्षक कविता का संदर्भ लेते हुए बच्चों से पेड़ों के महत्त्व पर चर्चा करेंगे। इसके बाद शिक्षक प्रत्येक बच्चे को कार्यपत्रक में उत्तर लिखने को कहेंगे। कार्यपत्रक में दिये गये प्रश्नों का उत्तर अपने अनुभवों एवं शब्दों के आधार पर देंगे।

- सोचो, अगर पेड़ काट दिए जाएं तो क्या होगा?
- पेड़ हमारे साथी क्यों कहे जाते हैं ?

➢ आप अपने गाँव को हरित गाँव कैसे बनाएँगे ?

उसके बाद शिक्षक बच्चों से उनके उत्तर को सुनेंगे एवं कक्षा के अन्य बच्चे भी सुनेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक कविता का आदर्श पाठ करेंगे, जिसका बच्चे सस्वर पाठ करेंगे।

"काले–काले बादल छाए,
साथ में ठण्डी हवा लाए।
बिजली चमकी, बादल गरजे,
झम–झम, झम–झम पानी बरसे।
बरस रहा है जमकर पानी,
खुश हैं सारे जग के प्राणी।"

➢ आसमान में जब बादल छा जाते हैं, तब धूप गायब हो जाती है। इसके अलावा और क्या–क्या होता है?

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक व दो को पूर्ण करने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

बच्चों! आज हम लोगों ने कुछ कविताएँ व कहानियाँ पढ़ीं तथा उनमें वर्णित परिस्थितियों से स्वयं को जोड़ते हुए अपने उत्तरों को लिखना सीखा।

इसी प्रकार हमें लिखने की आदत का विकास करना है, जैसे– अपनी दिनचर्या लिखना, अपनी पसंद के बारे में लिखना आदि।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 8

दिवस–39

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– दिए गए पात्रों के आधार पर नयी कहानी बना लेते हैं।

सहायक सामग्री– चित्र कार्ड, कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कक्षा–कक्ष में व्यावहारिक बातचीत करेंगे। शिक्षक बच्चों से घर में रहने वाले पालतू व जंगल में रहने वाले जानवरों के नाम पूछेंगे। शिक्षक बच्चों को शेर, चूहा और शिकारी का चित्रकार्ड दिखाकर एक कहानी सुनाएँगे और उस कहानी से संबंधित प्रश्न करेंगे–

एक जंगल में एक शेर रहता था। एक दिन शेर पेड़ के नीचे सो रहा था, तभी एक चूहा वहाँ आया और शेर के ऊपर उछल–कूद करके शेर को जगा दिया। शेर ने चूहे को पकड़ लिया और बोला अब मैं तुम्हें खा जाऊँगा। चूहे ने शेर से माफी माँगते हुए कहा कि मैं तो बहुत छोटा हूँ, मुझे छोड़ दीजिए। मैं किसी ना किसी दिन आपके काम आऊँगा। तब शेर ने चूहे को छोड़ दिया।

एक दिन जब शेर पुनः सो रहा था तो एक शिकारी ने उसे अपने जाल में फँसा लिया। शेर मदद के लिए पुकारने लगा। तभी वहाँ पर चूहा आया और अपने दाँत से जाल को काटकर शेर को जाल से छुड़ा लिया।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक सुनाई गई कहानी के आधार पर बच्चों से कुछ प्रश्न करेंगे–

1. कहानी के मुख्य पात्र कौन–कौन से हैं?
2. पेड़ के नीचे कौन सो रहा था?
3. चूहे ने शेर को कैसे बचाया?
4. इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

शिक्षक बच्चों से इस कहानी को अपनी भाषा में सुनाने को कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को कुछ शब्द देकर एक छोटी सी कहानी का निर्माण करने के लिए कहेंगे और कार्यपत्रक संख्या एक के आधार पर एक कहानी कार्यपत्रक पर ही लिखने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या दो में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 8

दिवस–40

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे सार्थक शब्दों को समझते हैं तथा उनकी रचना करते हैं।

सहायक सामग्री– चित्र कार्ड, शब्द कार्ड, चार्ट पेपर, आई० टी० सी० और पाठ्यपुस्तक आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों के पठन कौशल को समझते हुए एवं उनके पूर्वज्ञान से जोड़ते हुए एक गद्य खण्ड को पढ़ने के लिये देंगे–

चल घर सरपट, मत कर खटपट।
रथ पर चढ़, डर मत, बढ़ चल
अब घर चल, छत पर चढ़
नगर–डगर मत कह, सच कह
पटपट मत कर।

शिक्षण के मध्य

उपर्युक्त अमात्रिक शब्दों के आधार पर शिक्षक बच्चों से सार्थक शब्द बनवाएँगे–

क. प + ... =

ख. स + ... + प + ... =

ग. न + ... + र =

घ. प + ... + प + ... =

शिक्षक शिक्षण कक्ष में चार–चार के समूह में बच्चों को बैठाएँगे तथा क्रमानुसार संवाद करेंगे।

शिक्षक श्यामपट्ट पर वर्ग पहेली बनाएँगे तथा बच्चों से वर्ग पहेली में दिये गये शब्दों को चुनकर सार्थक शब्द बनाकर अपनी कॉपी में लिखने को कहेंगे–

ख	ट	म	ल	ह	र
ब	र	ग	द	ठ	प
र	ब	र	ड	ह	म
ह	ल	क	ग	र	न
र	म	ग	र	च	र

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों का कार्यपत्रक के माध्यम से आकलन करेंगे।

प्रदत्त कार्य– वर्गपहेली के माध्यम से बच्चे घर से अमात्रिक सार्थक शब्द बनाकर लाएँगे–

श	ह	र	न	म	क
ह	ल	क्ष	क	ह	ट
द	म	क	ल	क	ह
र	ग	र	म	द	ल
स	र	ल	ग	म	न

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–41

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विराम चिह्न की पहचान करते हैं तथा इसका लेखन में प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– विराम चिह्न युक्त फ्लैश कार्ड एवं विविध विराम चिह्न युक्त अनुच्छेद का चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक द्वारा बच्चों के छोटे–छोटे समूह (तीन से पाँच बच्चों के) बनाए जाएँगे। बच्चे शिक्षक के निर्देशानुसार अपने–अपने समूह में बैठ जाएँगे।

सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों को कुछ वाक्य (किताब से या स्वयं सोचकर श्यामपट्ट पर लिखकर) बताएँगे, जैसे–

➢ रमेश कक्षा में आ गया है।**(ठहराव)**

(संवाद– उपर्युक्त वाक्य में शिक्षक ठहराव का तात्पर्य बच्चों को समझाएँगे और बताएँगे कि पूर्ण विराम चिह्न के प्रयोग के कारण **'रमेश कक्षा में आ गया है'** अर्थात् रमेश कक्षा में उपस्थित है।)

➢ रमेश कक्षा में आ गया है! **(आश्चर्य)**

(संवाद– इस वाक्य में शिक्षक यह बताएँगे कि **'रमेश कक्षा में आ गया है'** का तात्पर्य है कि विस्मयादि बोधक(!) चिह्न के प्रयोग के कारण रमेश बहुत दिन से कक्षा में नहीं आ रहा था, आज अचानक आ गया है।)

शिक्षक इसी तरह के अन्य वाक्य बनाकर बच्चों का अभ्यास करवाएँगे।

शिक्षण के मध्य

- रमेश कक्षा में आ गया है?**(प्रश्न)**

(संवाद– इस वाक्य में शिक्षक प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग करके यहाँ पर यह पूछ रहे हैं कि कक्षा में रमेश उपस्थित है या नहीं अर्थात् प्रश्न किया जा रहा है।)

- रोको मत, जाने दो।**(जाने की अनुमति प्रदान की जा रही है।)**

(संवाद– इस वाक्य के अंतर्गत शिक्षक यह स्पष्ट करेंगे कि रोको मत के बाद अल्पविराम का चिह्न है अर्थात् किसी व्यक्ति विशेष को रोको मत, जाने दो।)

- रोको, मत जाने दो।**(जाने की अनुमति नहीं प्रदान की जा रही है)**

(संवाद – इस वाक्य में शिक्षक द्वारा यह बताया जाएगा कि रुको के बाद अल्पविराम का चिह्न लगा है अर्थात् इसमें रोकने पर बल दिया जा रहा है और जाने से रोकने को कहा जा रहा है।)

- **विवेकानंद ने कहा है कि, "सभी शक्ति तुम्हारे भीतर है आप कुछ भी और सब कुछ कर सकते हैं।"**

{संवाद– इस वाक्य के माध्यम से शिक्षक यह स्पष्ट करेंगे कि किसी के कथन को जिसे हू–ब–हू लिखा जाता है उस कथन को उद्धरण चिह्न (" ") के अंदर लिखा जाता है।}

बच्चे शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखे जा रहे इन वाक्यों को पढ़ते हैं तत्पश्चात् लिखकर समझने का प्रयास करते हैं ।

शिक्षण के अंत में

विराम चिह्न को और अधिक अच्छे ढंग से सिखाने के लिए शिक्षक कार्यपत्रक संख्या एक व दो का प्रयोग करेंगे।

एक बार पुनः सभी विराम चिह्नों का अभ्यास कराते हुए उनके मूल–भाव से परिचित कराएँगे, साथ में कुछ सरल वाक्य देकर उन पर विराम चिह्न लगाने के लिए कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–42

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे शब्दों में प्रयुक्त होने वाले उपसर्गों की पहचान कर लेते हैं।

सहायक सामग्रीः– उपसर्ग लिखे हुए कुछ फ्लैश कार्ड, जैसे–

अ ना सु खुश गम आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से बातचीत करते हुए एक छोटी कविता सुनाएँगे और बच्चों को बातचीत करने का अवसर प्रदान करेंगे। शिक्षक द्वारा कविता का पाठ किया जाएगा तथा उपसर्ग वाले शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर उपसर्गों पर गोला बनाया जाएगा।

तू है हठी मानधन मेरे,
सुन उपवन में बड़े सबेरे ।
तात भ्रमण करते थे तेरे,
जहाँ सुरभि मनमानी ।
गाते थे खग कल–कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से ।
गिरा बिद्ध होकर खर शर से
हुई पक्षी की हानी।
करुणा भरी कहानी।
हुआ विवाद सदय–निर्दय में
उभय आग्रही थे स्व विषय में
गयी बात तब न्यायालय में
सुनी सभी ने जानी ।
व्यापक हुई कहानी।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक द्वारा बच्चों को बताया जाएगा कि उपसर्ग ऐसे शब्दांशों को कहते हैं, जो किसी शब्द के पूर्व में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या अर्थ में विशेषता ला देते हैं। कुछ अन्य शब्दों से परिचय कराएँगे तथा सुनाई गई कविता में अन्य उपसर्गों (जिन पर गोला बनाया गया है) को पुनः श्यामपट्ट पर लिखेंगे। उपसर्गो से संबंधित कार्यपत्रक पर अभ्यास कार्य करवाएँगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कार्यपत्रकों की जाँच करने के बाद जिन बच्चों को उपसर्ग समझने में समस्याएं आ रही हैं उनका समाधान करेंगे। कुछ शब्द बच्चों की कॉपी में लिखवाएँगे– जैसे– आजन्म, निडर, उपकार, अपमान, अनपढ़, असंभव, अन्याय, अज्ञान उपरोक्त शब्दों में से उपसर्ग छाँटने तथा लिखने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–43

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विभिन्न प्रकार के पत्र लिखते हैं।

सहायक सामग्री– विवाह के निमंत्रण–पत्र, बधाई पत्र एवं कार्यपत्रक (प्रार्थना पत्र, सूचना पत्र)।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से बातचीत करेंगे।

शिक्षक– इस वर्ष आप लोगों में से कितने लोग विवाह समारोह में शामिल हुए थे?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– अच्छा ये बताइए कि आपको विवाह में शामिल होने के लिए बुलाया गया था या नहीं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– आपको विवाह में शामिल होने के लिए किस माध्यम से बुलाया गया था?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को कुछ पत्र दिखाते हुए उसके बारे में निम्नलिखित बिन्दुओं पर बातचीत करेंगे–

- यह पत्र क्यों लिखा गया है?
- यह पत्र किसे लिखा गया है?
- यह पत्र कब लिखा गया है?
- यह पत्र किसके द्वारा लिखा गया है?

गतिविधि 1–

शिक्षक बच्चों को जोड़े में बैठाएँगे। शिक्षक कार्यपत्रक संख्या एक को समझाते हुए उसे बच्चों से भरने के लिए कहेंगे। बच्चों को आवश्यक दिशानिर्देश प्रदान करेंगे। अवकाश का कारण– बीमारी, विवाह में शामिल होना, कहीं अन्यत्र जाना हो सकता है। बच्चे आपसी बातचीत से प्रपत्र भरेंगे तथा शिक्षक उनका सहयोग करेंगे।

गतिविधि 2–

शिक्षक बच्चों को साधारण–पत्र (अपने बारे में बताने हेतु सुख–दुःख, जन्मदिन की पार्टी आदि के लिए लिखा जाने वाला) के बारे में बताएँगे।

बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक में लिखे गए पत्र को पढ़ने के लिए कहेंगे तथा बच्चों से पूछेंगे कि उन्होंने क्या समझा। इसके बाद शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या दो को पूरा करने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक पुनः बच्चों को पत्र लिखने का कारण तथा उसके क्रम की चर्चा करेंगे। बच्चों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी देंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–44

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे स्वयं द्वारा देखे गए मेला/प्रदर्शनी/दर्शनीय स्थल आदि का वर्णन अपने शब्दों में कर लेते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, मेला का चित्र–चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

प्रारंभ में शिक्षक द्वारा एक चित्र (मेला का चित्र) दिखा कर उस पर चर्चा की जाएगी। चर्चा के बिंदु निम्नलिखित रूप में हो सकते हैं–

- यह कहाँ का चित्र है?
- आप में से कौन–कौन मेला देखने गया है?
- वहाँ आपने क्या–क्या देखा?

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक पर अपने अनुभवों को अपने शब्दों में लिखने के लिए कहेंगे। इस प्रक्रिया में बच्चों को स्वतंत्र रूप से लेखन के लिए प्रेरित करना है किंतु यदि कुछ बच्चों को इसमें कठिनाई का अनुभव होता है तो उन्हें निम्नलिखित प्रश्नों के अनुसार लिखने के लिए प्रेरित करेंगे।

स्वयं द्वारा भ्रमण किए गए स्थल/मेला/प्रदर्शनी आदि के बारे में लिखना

- वहाँ आपने क्या–क्या देखा?
- वहाँ आपको क्या–क्या अच्छा लगा?
- वहाँ आपको क्या–क्या अच्छा नहीं लगा?

➤ आप उसमें किस प्रकार का सुधार करना चाहेंगे?

शिक्षक अपनी समझ के अनुसार ऐसे अन्य प्रश्नों का निर्माण स्वयं भी कर सकते हैं। बच्चों को लिखने हेतु कुछ समय दिया जाएगा, उसके बाद शिक्षक बच्चों को उनके द्वारा लिखे गए अनुभवों को कक्षा में बोलकर साझा करने को कहेंगे।

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या दो में दिये गए विषय पर अपने अनुभवों को लिखित रूप से अभिव्यक्त करने को कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक द्वारा कार्यपत्रक को पूर्ण करने में बच्चों का अपेक्षित सहयोग किया जाएगा।

शिक्षक– बच्चो! आज हम लोगों ने अपने अनुभवों/विचारों को अभिव्यक्त करना (लिखित एवं मौखिक रूप में) सीखा और अपनी कल्पना शक्ति से इस पर विचार किया कि किसी विषय को और अच्छा कैसे बनाया जा सकता है। इसी प्रकार अपनी रुचि के अन्य विषयों पर भी हमें लिखने की आदत विकसित करनी चाहिए।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिये गए विषय पर अपने अनुभवों को घर से लिखकर लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–45

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे शब्दों में आए प्रत्यय की पहचान करते हैं।

सहायक सामग्री– चार्ट पेपर एवं प्रत्यययुक्त शब्द कार्ड।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों के दो समूह बनाकर उनके बीच दो प्रकार के कार्ड रखेंगे– शब्दयुक्त कार्ड एवं प्रत्यययुक्त कार्ड। एक समूह को शब्द–युक्त कार्ड छाँटने के लिए तथा दूसरे को प्रत्यययुक्त कार्ड छाँटने को कहेंगे। उसके बाद पहले शब्द–कार्ड एवं ठीक उसके बाद प्रत्यययुक्त कार्ड रखने को कहेंगे। अब उन्हें प्रत्यय–युक्त शब्दों को पढ़ने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के मध्य

प्रत्यययुक्त कार्ड को क्रम से लगाने के बाद शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि **ऐसे शब्द जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें प्रत्यय शब्द कहते हैं**, जैसे–

ज्ञान + वान = ज्ञानवान

बल + वान = बलवान

अकेला + पन = अकेलापन

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक व दो पर अभ्यास करने का अवसर देंगे तथा उनके कार्यपत्रक की जाँच करेंगे।

शिक्षण के अंत में

कार्यपत्रकों की जाँच करने के बाद प्रत्यय–युक्त शब्दों पर पुनः चर्चा करते हुए कुछ प्रत्यययुक्त शब्द बनाने के लिए कहेंगे–

धन + वान = ____________

बाल + पन = ____________

मानव + ता = ____________

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–46

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे दिए गए अनुच्छेद/पद्यांश में से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया की पहचान कर लिख लेते हैं।

सहायक सामग्री– शब्दों के फ्लैश कार्ड, गद्यांश /अनुच्छेद/ पद्यांश चार्ट पर लिखा हुआ इत्यादि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक शिक्षण की शुरुआत संज्ञा, सर्वनाम के उदाहरणों से करेंगे। अभ्यास के बाद परिभाषा पर आएँगे।

संज्ञा– किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं, जैसे– मोहन, वाराणसी, वस्त्र, प्रेम इत्यादि ।

सर्वनाम– संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं, जैसे– यह, वह, तुम, ये, वे, आदि।

विशेषण– संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं, जैसे – सुंदर, अच्छा, कोमल आदि।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को एक अनुच्छेद देंगे और उसमें संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्द छाँटकर कॉपी में लिखने के लिए कहेंगे।

गतिविधि 1–

चिड़िया सोचने लगी कि यह कैसा देश है, जहाँ लोग इतने स्वार्थी हैं कि किसी और की समस्या की जरा भी चिंता नहीं करते! वह यह सोच ही रही थी कि उसे घोड़े पर सवार मंत्री दिखाई दिया। उसने उसे रोका और बोली– "मंत्री जी क्या आप मुझ गरीब पर दया नहीं करेंगे? मेरा मटर का दाना गुम हो गया है और इधर से जितने भी सरकारी कर्मचारी निकले वह मेरी सहायता करने से इंकार कर रहे हैं।" मंत्री बोला– "तुम्हारी सहायता तो करना चाहता हूँ लेकिन मेरे पास समय नहीं है।"

नोट– शिक्षक अनुच्छेद को चार्ट या श्यामपट्ट पर अपनी सुविधानुसार लिखकर दिखा सकते हैं।

बच्चो! आप सभी इस अनुच्छेद से संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया शब्द छाँटकर अपनी कॉपी में लिखिए–

संज्ञा	सर्वनाम	क्रिया
____________	____________	____________
____________	____________	____________
____________	____________	____________

बच्चे अनुच्छेद से संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया शब्दों को छाँटकर कॉपी पर लिखेंगे तथा शिक्षक उनकी कठिनाईयों का निवारण करेंगे।

गतिविधि 2–

बच्चो! दिए गए काव्यांश को पढ़िए और पहचानिए कि इसमें संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण के कितने शब्द हैं, उन्हें अपनी कॉपी में लिखिए–

भाई, सूरज
जरा इस आदमी को जगाओ,
भाई पवन,
जरा इस आदमी को हिलाओ,
यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेखबर,
सपनों में खोया पड़ा है।
भाई पंछी,
इसके कानों पर चिल्लाओ।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक व तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करने के लिए कहेंगे। शिक्षक पत्रक को पूर्ण करने में बच्चों का अपेक्षित सहयोग करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या दो को दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–47

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विभिन्न सामाजिक मुद्दो, जैसे– बालश्रम, शिक्षा, स्वच्छता के महत्त्व पर अपने विचार लिखकर व्यक्त करते हैं।

सहायक सामग्री– बालश्रम, बाल–विवाह, शिक्षा तथा स्वच्छता के महत्त्व से संबंधित चार्ट, आडियो, विडियो क्लिप्स।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक शिक्षण का प्रारंभ बच्चों से प्रश्नों के माध्यम से चर्चा–परिचर्चा करके करेंगे, जो इस प्रकार हो सकती है–

प्रश्न– क्या आप किसी ऐसे बच्चे को जानते हैं, जो विद्यालय न जाकर कोई अन्य काम जैसे– ठेला लगाना, दुकान पर बर्तन धोना या किसी कारखाने में काम करता है?

संभावित उत्तर– सोनू हलवाई की दुकान पर बर्तन धोता है और मीना कालोनी के एक घर में बच्चों को सँभालने का कार्य करती है।

प्रश्न– तुम्हारी कक्षा की रोमा प्रतिदिन विद्यालय क्यों नहीं आती है?

संभावित उत्तर– रोमा और उसका भाई राम दोनों ईंट के भट्ठे पर कार्य करते हैं, इसलिए वह प्रतिदिन विद्यालय नहीं आ पाती है।

प्रश्न– सीमा ने कक्षा–8 के बाद पढ़ाई क्यों छोड़ दी?

संभावित उत्तर– कक्षा पास करते ही सीमा की शादी हो गई।

प्रश्न– अच्छा बच्चो! यदि तुम सब इसके बारे में सोचो तो क्या तुम्हें ये सब अच्छा लगता है?

संभावित उत्तर– नहीं।

शिक्षण के मध्य

बच्चो! हम जिस समाज में रहते हैं उसमें व्याप्त सकारात्मक विचार हमारे जीवन को आगे की ओर ले जाते हैं और उसे सरल बनाते हैं, साथ ही हमारा विकास करते

हैं। परन्तु इसी समाज में कुछ ऐसे नकारात्मक मुद्दे भी होते हैं,जो व्यक्ति या बच्चों के विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं, जैसे– बालश्रम, प्रदूषण, बाल विवाह आदि। इसे इस प्रकार समझें–

बालश्रम– 14 वर्ष से छोटे बच्चों से किसी भी प्रकार का श्रम कराना, चाहे वह घर में ही क्यों न हो; बालश्रम के अन्तर्गत आता है। यह कानूनी रूप से अपराध घोषित है।

बाल–विवाह– यदि किसी लड़की का विवाह 18 वर्ष और लड़के का विवाह 21 वर्ष से कम उम्र में हो जाता है तो यह बाल–विवाह की श्रेणी में आता है।

स्वच्छता का महत्त्व– हमारे समाज में रह रहे लोगों का स्वच्छता के प्रति जागरूक होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि गंदगी से अनेक प्रकार की बीमारियाँ फैलती हैं। अभी हम सभी एक बहुत बड़ी महामारी (कोरोना) से गुजरे हैं। ये बीमारियाँ स्वच्छता की आदत न विकसित करने से होती हैं।

हमें समाज में हो रही इस तरह की नकारात्मक बातों का विरोध भी करना चाहिए और इसके प्रति जागरूकता भी फैलानी चाहिए।

गतिविधि–

विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर बने चार्ट पर समूह में चर्चा कराएँगे।

शिक्षण के अंत में

बच्चो! आप इस प्रकार के कुछ सामाजिक मुद्दों की सूची बनाइए जो आपको अपने आस–पास दिखाई देते हैं, किसी एक के बारे में विस्तार से लिखिए।

प्रदत्त कार्य– अखबार से कुछ इस तरह के सामाजिक मुद्दों से संबंधित समाचारों की कतरन एकत्रित करिए, जो आपके शहर या देश में घटित हो रहा है, उसे अपनी डायरी में चिपकाइए।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–48

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे वाक्यों का निर्माण एवं अनुच्छेद लेखन करते हैं।

सहायक सामग्री– चार्ट, शब्द कार्ड, फ्लैश कार्ड, इत्यादि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक अनुच्छेद को दिखाते हुए उसका प्रस्तुतीकरण करेंगे–

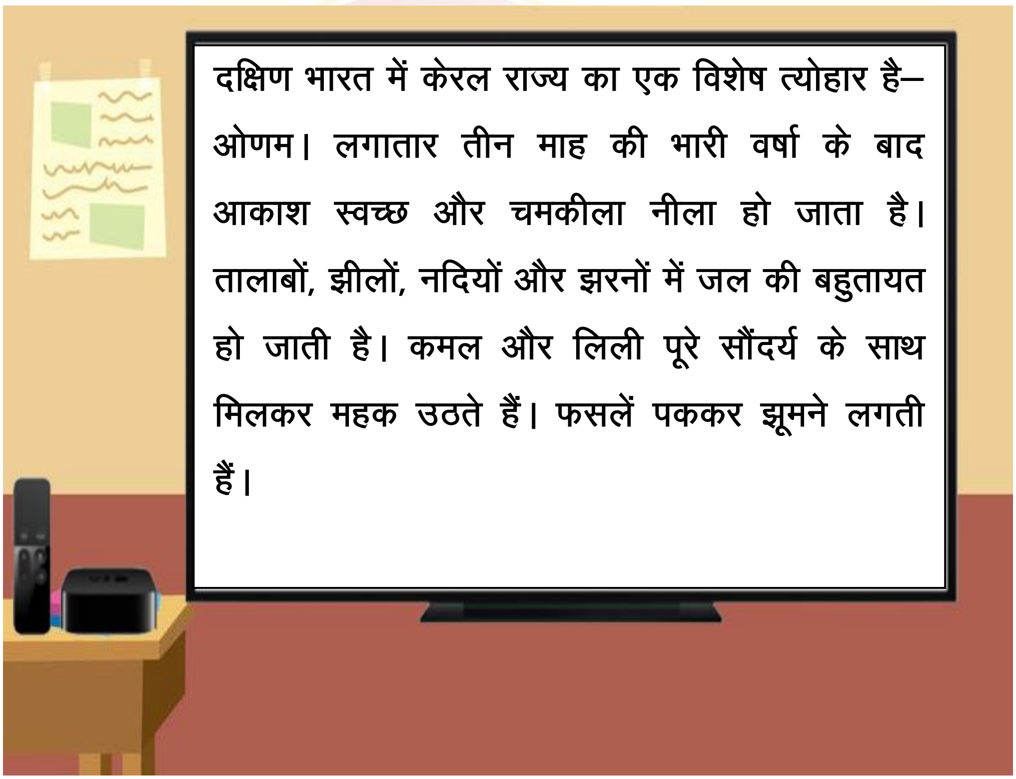

शिक्षण के मध्य

शिक्षक उपर्युक्त अनुच्छेद पर चर्चा करते हुए बच्चों को निबंध से परिचित कराते हुए बताएँगे कि निबंध गद्य की वह विधा है जिसमें भाषा के सुगठित एवं सहज प्रयोग द्वारा निबंधकार अपने विचारों, भावों एवं जीवनानुभवों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करता है। यह संक्षिप्त होता है, जैसे– **बाल दिवस**। 14 नवंबर को हमारे देश में बाल दिवस मनाया जाता है। इस दिन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन मनाते हैं।

गतिविधि 1–

शिक्षक बच्चों को कुछ विशेष दिवस या व्यक्ति, वस्तु का नाम देकर उस पर दस वाक्य लिखने को कहेंगे–

- 15 अगस्त (स्वतन्त्रता दिवस)
- 2 अक्टूबर (गाँधी जयन्ती)
- 26 जनवरी (गणतन्त्र दिवस)
- मेरा परिवार

शिक्षण के अंत में

बच्चों द्वारा लिखे गए निबंध को देखते हुए शिक्षक उनकी लेखन संबंधी कठिनाइयों का निवारण करेंगे।

प्रदत्त कार्य– बच्चे अपने प्रिय मित्र के बारे में दस वाक्य लिखकर लाएँगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–49

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अनुच्छेद को पढ़कर उसे अपने शब्दों में लिखते हैं।

सहायक सामग्री– पाठ्य पुस्तक, कुछ जानवरों के चित्र, चार्ट पेपर पर लिखा हुआ अनुच्छेद।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षण के प्रारंभ में शिक्षक बच्चों से अपने आपको जोड़ने के लिए जंगल, जंगली जीव–जन्तुओं, उनके रहन सहन पर सामान्य बातचीत करेंगे, जैसे –

- जंगल में क्या–क्या पाया जाता है?
- शाकाहारी जीव जंगल में कैसे जीवित रहते हैं ?
- कौन सा जानवर सबसे खूँखार एवं शक्तिशाली होता है?
- कौन से जीव चालाक होते हैं? आदि

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को चार्ट पेपर पर लिखा हुआ अनुच्छेद दिखाएँगे–

शेर के पद–चिह्नों को देखते हुए लोमड़ी धीरे–धीरे आगे बढ़ी। ऐसा करने में उसे समय अवश्य लगा लेकिन उसने यह देख लिया कि शेर के पैरों के निशान उसकी गुफा के भीतर गए हैं। उसे आभास हो गया कि उसकी गुफा में शेर बैठा है क्योंकि गुफा में शेर के पंजों के जाने के निशान तो थे, लेकिन बाहर निकलने के निशान कहीं भी नहीं उभरे थे। लोमड़ी ने ठंडे दिमाग से सोचा और शेर के पंजों के निशानों की पुनः बारीकी से छान–बीन की, लेकिन शेर के गुफा से बाहर आने के निशान उसे न मिल सके। उसे विश्वास हो गया कि शेर अभी तक गुफा के अन्दर ही है, जो कि अंदर जाते ही उस पर हमला कर देगा।

इस अनुच्छेद को पहले स्वयं पढ़कर बच्चों के सामने प्रस्तुत करेंगे। पुनः एक या दो बच्चों के माध्यम से प्रस्तुत कराएँगे। इसके बाद बच्चों से प्रश्न पूछे जाएँगे–

प्रश्न 1– गुफा के अन्दर कौन बैठा था ?

प्रश्न 2– गुफा किसकी थी ?

प्रश्न 3– गुफा के बाहर शेर के किस अंग के निशान थे?

प्रश्न 4– लोमड़ी ने क्या चालाकी दिखाई ?

प्रश्न 5– यदि लोमड़ी सीधे गुफा में चली जाती तो क्या होता?

गतिविधि–

सभी बच्चों को तीन समूहों में बाँट देंगे। उन्हें पेंसिल, रबर, स्केच पेन, स्केल, चार्ट पेपर आदि सामग्रियाँ दे देंगे तथा इस अनुच्छेद का सारांश अपने शब्दों में लिखने को कहेंगे तथा प्रत्येक समूह का प्रस्तुतीकरण कराएँगे। उस समय उनके लेखन पर सकारात्मक पुनर्बलन दिया जाएगा।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि किसी घटना/अनुच्छेद का सारांश लेखन करते समय ये ध्यान रखना चाहिए कि संक्षेपण ऐसा हो कि पूरी–पूरी घटना मूल रूप में समाहित हो जाए तथा यह मूल अनुच्छेद से छोटा भी हो। यह सरल, सहज तथा बोधगम्य भी होना चाहिए।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–50

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, एवं क्रिया विशेषण शब्दों की सहायता से अनुच्छेद लिखते हैं।

सहायक सामग्री– संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, एवं क्रिया–विशेषण युक्त कुछ शब्द कार्ड।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कक्षा के वातावरण को सहज बनाने हेतु एवं बच्चों में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया–विशेषण के समझ की जाँच करने हेतु एक वाक्य बोलेंगे तथा उस वाक्य से संबंधित कुछ प्रश्न करेंगे।

'दिनेश अपने भाई के साथ धीरे धीरे साइकिल चला रहा था।'

शिक्षक– इस वाक्य में संज्ञा शब्दों को बताइए।

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– प्रस्तुत वाक्य में सर्वनाम शब्द क्या है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– वाक्य में क्रिया–विशेषण शब्द को बताइए।

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं क्रिया–विशेषण के विषय में संक्षिप्त चर्चा करेंगे। उसके बाद बच्चों के समक्ष शिक्षक कुछ शब्द (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया–विशेषण

युक्त) श्यामपट्ट पर लिखते हुए बताएँगे कि इन शब्दों के माध्यम से किस प्रकार से अनुच्छेद का निर्माण किया जाता है।

कछुआ, खरगोश, मित्र, हमारी, तुम्हारी, दौड़, तेज, खेलना

कछुआ और खरगोश में गहरी मित्रता थी। दोनों साथ रहते और खेलते थे। एक दिन खरगोश ने कछुआ से कहा मित्र क्यों न एक दिन हमारी तुम्हारी दौड़ हो जाए, जिससे यह पता चल जाएगा कि हम दोनों में कौन तेज दौड़ता है। दोनों ने अपने साथियों को बुलाकर दौड़ का रास्ता और गंतव्य स्थल तथा दिन निश्चित कर लिया।

अब शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि इस प्रकार अनुच्छेद का निर्माण किया जाता है।

इसके बाद शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक में दिए गए शब्दों की सहायता से अनुच्छेद निर्माण करने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक पुनः बच्चों को बताएँगे कि इन शब्दों का प्रयोग किस प्रकार से करते हुए अनुच्छेद का निर्माण किया जाता है। शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या दो में दिए गए निर्देश के अनुसार पूर्ण करने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– बच्चे कार्यपत्रक संख्या तीन को दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके ले आएँगे।

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

राज्य हिन्दी संस्थान . उ.प्र. वाराणसी

उत्तिष्ठत जाग्रत

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(स्थापना वर्ष-1975)

निकट पुलिस लाइन, वाराणसी (पिनकोड-221001)

ई-मेल : rajyahindisansthan1975@gmail.com

वेबसाइट : rajyahindisansthanupvns.org.in